

मारु संदेश

पत्रिका / जे.आर.ओ. / 2025

आठवा अंक

राजस्थान राज्य में इन्फ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र के विकास में हुडको के बढ़ते कदम



जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

हडको वित्त पोषित CSR योजनाएं



संरक्षक एवं संपादक

श्री सुधीर कुमार भटनागर
क्षेत्रीय प्रमुख

सह संपादक

श्रीमती रेनू चौधरी
हिन्दी नोडल अधिकारी
एवं

श्री आशीष कुमार
हिन्दी नोडल सहायक

विशेष सहयोग

क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कार्मिक

संदेश



मुझे यह जानकारी अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय अपनी गृह पत्रिका **"मरू संदेश"** का 8 वाँ अंक ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित कर रहा है। राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए गृह पत्रिकाएं अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हिंदी बहुत ही सहज, सरल और उदार भाषा है। नई तकनीक और प्रौद्योगिकी के सहयोग से इसकी क्षमता और सामर्थ्य का और भी अधिक विस्तार हुआ है।

वित्तीय वर्ष 2024-25 में राजस्थान राज्य में हडको ने विगत वर्षों के सापेक्ष कई योजनाओं (इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास एवं आवास) पर वित्तीय सहायता प्रदान की है, जिनमें प्रमुख योजनाएँ – जल जीवन मिशन, इंटरसिटी सड़क निर्माण योजनाएँ, पावर सेक्टर की योजनाएँ, अक्षय उर्जा सोलर पार्क, अमृत योजना के साथ – साथ नगर निकायों में इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास कार्यों का निर्माण, इत्यादि पर वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय, परामर्श सेवाओं के क्षेत्र में भी विभिन्न संस्थानों को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है। हडको राजस्थान राज्य के विकास में सदैव अग्रणी संस्थान रहा है।

उपरोक्त उपलब्धियों के साथ – साथ हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय राजभाषा के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाहन करने का प्रयास कर रहा है। गृह पत्रिका **मरू संदेश** में हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों, ज्ञानवर्धक लेख, तकनीकी जानकारी आदि को हिंदी भाषा के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया गया है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय एवं सभी कार्मिकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

संजय कुलश्रेष्ठ

संजय कुलश्रेष्ठ
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश



यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय अपनी गृह पत्रिका **"मरू संदेश"** के 8^{वें} अंक का प्रकाशन करते हुए राजभाषा के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह कर रहा है। इस अंक में जहाँ एक ओर हडको की कार्य प्रणाली और तकनीकी जानकारी का समावेश है, वहीं दूसरी ओर विभिन्न विधाओं पर विचारात्मक लेख, प्रेरणास्पद कहानियाँ, कविताएँ तथा क्षेत्रीय कार्यालय की विविध गतिविधियाँ भी परिलक्षित की गई है।

हडको द्वारा राजस्थान राज्य के आवास एवं इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास की विभिन्न परियोजनाओं के लिए वित्तीय एवं तकनीकी सहायता प्रदान की जा रही है। इसके अतिरिक्त हडको जयपुर द्वारा परामर्श सेवाओं के क्षेत्र में भी अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है। इस वित्तीय वर्ष में अब तक जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा उच्चतम ऋण स्वीकृत एवं अवमुक्ति का लक्ष्य प्राप्त किया गया है।

उपरोक्त के साथ – साथ राजभाषा के क्षेत्र में भी जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय उत्कृष्ट कार्यों का प्रदर्शन कर रहा है। हडको की विभिन्न गतिविधियों को इस पत्रिका के माध्यम से एक साथ पिरोने का प्रयास किया गया है। मैं जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय को **"मरू संदेश" ई-पत्रिका** के निरंतर सफल प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इस दिशा में सकारात्मक प्रयास किए जाते रहेंगे।

एम. नागराज

एम. नागराज
निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

संदेश



जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय राजभाषा के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसी क्रम में जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय की ओर से ई-पत्रिका **“मरु संदेश”** का 8^{वां} अंक प्रकाशित किया जाना गर्व का विषय है।

हडको द्वारा राजस्थान राज्य में विभिन्न परियोजनाओं पर वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। जिसमें जल आपूर्ति, सड़क निर्माण, आधारभूत सुविधा का निर्माण, सिवेरज, ड्रेनेज, स्मार्ट सिटी, इत्यादि हेतु ऋण स्वीकृति एवं अवमुक्ति की जा रही है। हडको राजस्थान राज्य के विकास में महत्ती भूमिका अदा कर रहा है। गत 3 वर्ष की तुलना में हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय में ऋण स्वीकृति में तीन गुना की वृद्धि हुई है।

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा राजभाषा संबंधी दिशा – निर्देशों का पालन किया जा रहा है। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है, बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। इसी क्रम में **ई-पत्रिका मरु संदेश** के 8^{वें} अंक का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। मैं जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय के सभी सदस्यों को इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

दलजीत

दलजीत सिंह खतरी
निदेशक (वित्त)

संदेश



राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए कार्यालय में गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह प्रसन्नता का विषय है कि हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय अपनी गृह ई-पत्रिका **“मरू संदेश”** के **8वें अंक** का प्रकाशन कर रहा है।

हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा गृह ई-पत्रिका का प्रकाशन डिजिटलीकरण को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास है। सरकारी कामकाज में राजभाषा प्रयोग के उत्तरोत्तर विकास में हिंदी गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन उपयोगी सिद्ध होता है।

अतः मैं जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कार्मिकों को राजभाषा के प्रति स्नेह के लिए बधाई देता हूँ, तथा आशा करता हूँ कि **मरू संदेश** का अनवरत प्रकाशन जारी रहेगा।

शुभकामनाओं सहित।

विनीत गुप्ता
प्रमुख सतर्कता अधिकारी

संदेश



जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय की गृह पत्रिका “**मरू संदेश**” का 8^{वां} अंक ई-पत्रिका के रूप में आपको सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

भाषा संस्कृति का कोष और वाहन है। भाषा केवल विचारों के आदान प्रदान का माध्यम ही नहीं अपितु विचारों की जननी के रूप में उनके भावों को स्वरूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी भी देश का विकास तभी सम्भव है जब उसके पास अपनी सशक्त भाषा हो। भाषा किसी भी देश की भावनाओं एवं अस्मिता से जुड़ी होती है। राजभाषा हिंदी को अपने दैनिक कार्यक्रम में शामिल करने से न केवल हम अपने कार्यालयिक दायित्व को पूरा करते हैं बल्कि अपनी अस्मिता को भी सुरक्षित करते हैं।

अपने अस्तित्व को सुरक्षित करना हमारा कर्तव्य ही नहीं बल्कि दायित्व भी है, इसलिए हमें अपना कार्यालयीन कार्य हिंदी में करना चाहिए। यह सरल एवं सुगम भी है। राजभाषा के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने की दिशा में मरू संदेश का निरंतर प्रकाशन एक छोटा सा प्रयास मात्र है। आशा है कि यह प्रयास सफल रहेगा। आपकी बहुमूल्य प्रतिक्रिया एवं सुझाव अवश्य भेजें, जिससे इस पत्रिका को बहुपयोगी बनाया जा सके।

सुधीर कुमार भटनागर
क्षेत्रीय प्रमुख

हडको के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय जयपुर में राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट में



हडको के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय एशिया एवं प्रशांत क्षेत्र में 12वें क्षेत्रीय 3आर एवं सर्कुलर इकोनॉमी फोरम, जयपुर में



एम.ओ.यू. / अनुबंध



अगले 5 वर्षों में इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट परियोजनाओं हेतु राज्य सरकार के साथ रु. 1 लाख करोड़ का MOU



राजस्थान में पर्यटन विकास कार्यों हेतु RTDC को रु. 415.00 करोड़ की वित्तीय सहायता

नगर पालिका जैतारण के साथ कंसल्टेंसी सर्विसेज हेतु MOU (विस्तृत परियोजना रिपोर्ट – Development & Beautification alongwith comprehensive sewerage and drainage plan)

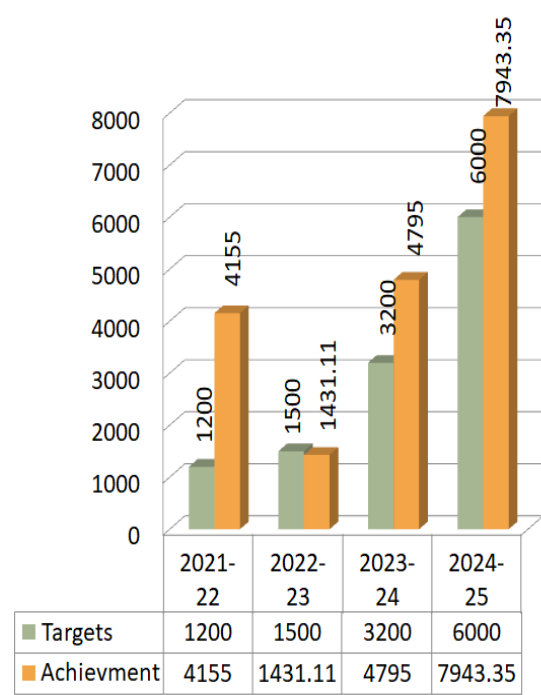
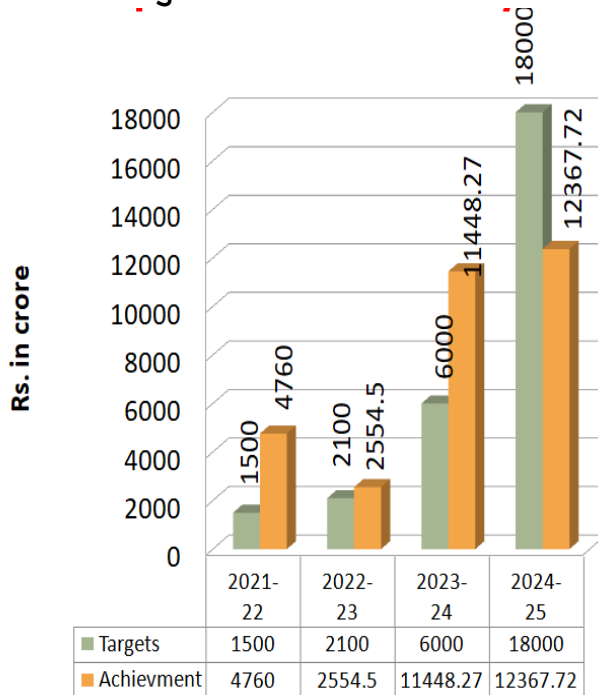


राजस्थान के विकास में हडको का योगदान

हडको देश में इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास एवं आवास की विभिन्न योजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए केंद्र सरकार का अग्रणी तकनीकी वित्तीय उपक्रम है। हडको अपने कार्य क्षेत्र को विस्तृत करते हुए राज्य के विकास में वित्तीय सहायता के साथ-साथ विभिन्न विकास की परियोजनाओं पर तकनीकी सहायता भी प्रदान करने जा रहा है। हडको द्वारा देश के विकास में वित्त पोषण के माध्यम से वित्तीय वर्ष 2024-25 में विगत वर्षों के सापेक्ष महती प्रगति की गई है।

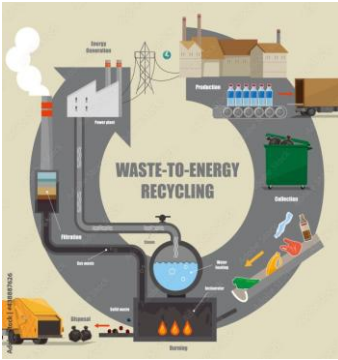
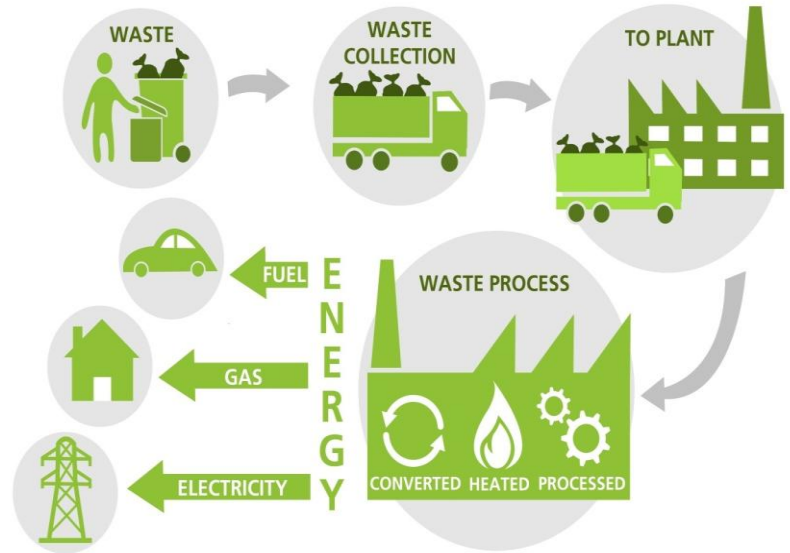
राजस्थान राज्य में भी हडको द्वारा वित्तीय वर्ष 2024 - 25 में विगत वर्षों के सापेक्ष कई योजनाओं पर वित्तीय सहायता प्रदान की गई है, जिनमें प्रमुख योजनाएँ जल जीवन मिशन , इंटरसिटी सड़क निर्माण योजनाएँ, पावर सेक्टर की योजनाएँ, अक्षय ऊर्जा सोलर पार्क, स्मार्ट सिटी और अमृत योजना के साथ साथ नगर निकायों में विभिन्न बुनियादी ढांचे के विकास - कार्यों का निर्माण, भरतपुर ड्रेनेज योजना, इत्यादि है।

हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय पिछले 4 वर्षों में :-



वेस्ट टू एनर्जी प्लांट (Waste to Energy Plant)

परिचय: वर्तमान समय में दुनिया भर में बढ़ते हुए कचरे की समस्या एक गंभीर चुनौती बन चुकी है। बढ़ती जनसंख्या और शहरीकरण के कारण कचरे का उत्पादन लगातार बढ़ रहा है, जिससे पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। इस समस्या से निपटने के लिए वेस्ट टू एनर्जी प्लांट एक प्रभावी समाधान के रूप में उभरा है। यह तकनीक कचरे को ऊर्जा के रूप में परिवर्तित करने का एक तरीका है, जिससे न केवल कचरे का निपटारा होता है, बल्कि ऊर्जा की भी प्राप्ति होती है।



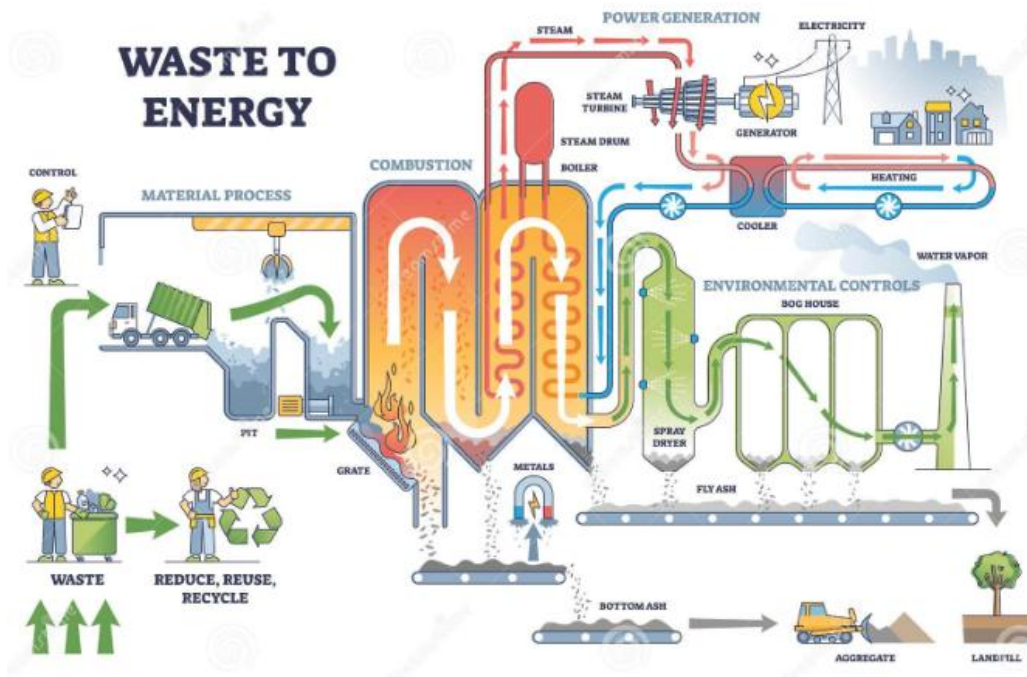
वेस्ट टू एनर्जी प्लांट क्या है? वेस्ट टू एनर्जी (WTE) प्लांट एक ऐसा संयंत्र है, जो विभिन्न प्रकार के कचरे जैसे- घरों, औद्योगिक इकाइयों, कृषि क्षेत्र से निकलने वाले कचरे को जलाकर ऊर्जा उत्पादन करता है। इस प्रक्रिया में कचरे को उच्च तापमान पर जलाया जाता है, जिससे उसमें मौजूद कार्बन सामग्री ऊर्जा के रूप में परिवर्तित होती है। इसके माध्यम से विद्युत उत्पादन, गर्मी उत्पादन, या बायोगैस उत्पादन किया जा सकता है।

वेस्ट टू एनर्जी के लाभ:

1. **पर्यावरण संरक्षण:** कचरे को जलाकर उसे ऊर्जा में परिवर्तित करने से डंपिंग ग्राउंड में कचरे का जमा होना कम हो जाता है, जिससे प्रदूषण में कमी आती है। यह प्रक्रिया ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को भी कम करने में मदद करती है।
2. **ऊर्जा उत्पादन:** वेस्ट टू एनर्जी प्लांट से उत्पन्न ऊर्जा का उपयोग उद्योगों और घरों में बिजली आपूर्ति के लिए किया जा सकता है। यह पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों का विकल्प प्रदान करता है, जो प्रदूषण पैदा करते हैं।



3. **कचरे का पुनर्चक्रण:** यह प्लांट कचरे का पुनर्चक्रण करता है और कचरे के पुनः उपयोग के लिए नए तरीके उत्पन्न करता है। इससे कचरे का निपटारा अधिक प्रभावी तरीके से किया जा सकता है।
4. **आर्थिक फायदे:** कचरे को ऊर्जा में बदलने से नए रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं। इसके अलावा, यह ऊर्जा आयात पर निर्भरता को कम करने में मदद करता है, जिससे राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक लाभ होता है।



वेस्ट टू एनर्जी की प्रक्रिया:

1. **कचरे का संग्रहण:** पहले कचरे को एकत्रित किया जाता है, जिसमें घरेलू, औद्योगिक और कृषि कचरा शामिल हो सकता है। इस कचरे को वेस्ट टू एनर्जी प्लांट में लाया जाता है।
2. **कचरे का उपचार:** कचरे को छांटा और तैयार किया जाता है ताकि केवल जैविक और जलाने योग्य सामग्री का उपयोग किया जा सके। इस चरण में अनावश्यक या हानिकारक तत्वों को हटा दिया जाता है।
3. **जलाना:** कचरे को विशेष उच्च तापमान पर जलाया जाता है। जलाने के दौरान उत्पन्न ऊर्जा को भाप (steam) के रूप में एकत्रित किया जाता है, जो टरबाइन के माध्यम से विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित होती है।

4. **बायोमास गैस का उत्पादन:** कुछ वेस्ट टू एनर्जी संयंत्रों में बायोगैस बनाने की प्रक्रिया भी की जाती है, जिसमें कचरे से उत्पन्न गैस को विद्युत उत्पादन के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

वेस्ट टू एनर्जी प्लांट एक प्रभावी समाधान है, जो कचरे की समस्या को सुलझाने के साथ-साथ ऊर्जा उत्पादन में भी मदद करता है। यह पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास के लिए एक स्थिर और दीर्घकालिक उपाय है। हालांकि, इसके कार्यान्वयन में कुछ चुनौतियां हैं, लेकिन यदि इसे सही तरीके से लागू किया जाए, तो यह कचरे के निपटारे और ऊर्जा उत्पादन के लिए एक उत्कृष्ट विकल्प साबित हो सकता है।

जयपुर में बन रहा राजस्थान का पहला वेस्ट टू एनर्जी प्लांट, कचरे से बनेगी बिजली, 1 घंटे में 12000 यूनिट उत्पादन: जयपुर में कचरे से बिजली बनने लगेगी। जयपुर के लांगडियावास में वेस्ट टू एनर्जी प्लांट को तैयार किया गया है। राजधानी में करीब 1000 टन कचरे को रिसाइकल करके करीब 12 मेगावाट बिजली का उत्पादन किया जाएगा। वेस्ट टू एनर्जी प्लांट से बनने वाली बिजली को जयपुर विद्युत वितरण निगम को दिया जाएगा, साथ ही इससे निकलने वाले पानी को साफ कर पेड़-पौधों में सिंचाई के लिए इस्तेमाल किया जाएगा यानी कि इस मल्टीपरपज प्रोजेक्ट से बिजली व पानी मिलने के साथ-साथ आमदनी भी हो रही है।

कचरे से कैसे बनाई जाएगी बिजली? : शहर से लाए गए कचरे का आरडीएफ (रेजिड्युय ड्राई फ्यूल)



बनाया जाएगा। इस आरडीएफ को बाउलर में काम में लिया जाएगा। बाउलर से हीट और स्टीम बनेगी। हीट से पावर जनरेट होगी और स्टीम को फिर से पानी में बदला जाएगा। यह लगातार रिसाइकिल होता रहेगा। प्रोसेसिंग के दौरान निकलने वाली गैसों का भी एफजीडी और बैक फिल्टर में ट्रीटमेंट होगा। ये प्रोसेस पूरे 24 घंटे चलता रहेगा। अनुमान है कि प्लांट में प्रतिदिन करीब 1 हजार टन कचरे की खपत होगी। इससे एक घंटे में 12 मेगावाट यानी 12 हजार यूनिट बिजली का उत्पादन होता रहेगा। अनुमान के मुताबिक, पूरे साल में करीब 3.30 लाख टन कचरे की खपत होगी। इससे 95 हजार मेगावाट यानी 9.5 करोड़ यूनिट बिजली का उत्पादन होगा। प्लांट में उत्पादित होने वाली बिजली ग्रिड सिस्टम के जरिए डिस्कॉम को सप्लाई होगी और फिर डिस्कॉम से शहर की अलग अलग कॉलोनियों में सप्लाई की जाएगी।

गरिमा स्वामी
वरिष्ठ प्रबंधक - परि

जल जीवन मिशन - राजस्थान में एक पहल

जल जीवन मिशन (JJM) भारत सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम है। इस मिशन को 15 अगस्त 2019 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा लॉन्च किया गया था। इस कार्यक्रम की अवधि बजट 2025-26 में बढ़ा कर 2028 तक कर दी गयी है। यह मिशन पेयजल को आम लोगों तक आसानी से पहुँचाने के साथ-साथ दीर्घकालिक जल स्रोतों का निर्माण, जल संरक्षण, प्रदूषण रहित जल की पहचान, जलप्रबंधन आदि की कार्ययोजना पर कार्य करता है।



परियोजना का उद्देश्य 30 वर्ष की डिजाइन अवधि को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक ग्रामीण घर को 55 लीटर प्रति व्यक्ति प्रति दिन (एलपीसीडी) की दर से सेवा स्तर के साथ कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शन (एफएचटीसी) यानी हर घर नल से जल (एचजीएनएसजे) प्रदान करना है।

राजस्थान जैसे सूखा प्रभावित राज्य में यह मिशन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यहाँ की ज्यादातर जनता को पीने के पानी की समस्या का सामना करना पड़ता है, और इस मिशन के

द्वारा इस समस्या को हल करने का प्रयास किया जा रहा है।

राजस्थान में जल जीवन मिशन के तहत जल आपूर्ति को बेहतर बनाने के लिए सरकार ने कई कदम उठाए हैं। राज्य में जलाशयों और जलस्रोतों की कमी के कारण, पानी का संग्रहण, पुनर्चक्रण और जलापूर्ति की बेहतर व्यवस्था की जा रही है। इस मिशन के अंतर्गत, पंचायतों और ग्रामीण क्षेत्रों में पाइप जलापूर्ति योजनाओं की शुरुआत की जा रही है, जिससे गांवों के हर घर तक स्वच्छ पानी पहुँच सके।



राजस्थान में जल जीवन मिशन की सफलता के लिए सरकारी विभागों, स्थानीय प्रशासन और ग्रामीण जनता के बीच सहयोग बहुत आवश्यक है। साथ ही, जल संरक्षण और जल उपयोग के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न अभियान चलाए जा रहे हैं। मिशन के अंतर्गत जल आपूर्ति, जल शोधन, और जल संरक्षण जैसे बुनियादी कार्यों पर जोर दिया जा रहा है। इस मिशन से ग्रामीण महिलाओं और बच्चों को पानी भरने के लिए दूर-दूर तक जाने की समस्या से राहत मिलेगी, और उनका जीवन आसान होगा।

राजस्थान में जल जीवन मिशन के कार्यान्वयन में कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं:

जल स्रोतों की कमी:

राजस्थान की अधिकांश जलस्रोतों में कमी है, और जल स्तर लगातार गिरता जा रहा है। जो जल स्रोत पहले उपलब्ध थे, वे अब सूखने की कगार पर हैं। इसके कारण, जल जीवन मिशन के लिए जल आपूर्ति की स्थिरता और निरंतरता सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है।



प्रौद्योगिकी की कमी और तकनीकी समस्याएँ:

जल जीवन मिशन के लिए आवश्यक जल आपूर्ति प्रणालियों और बुनियादी ढांचे को स्थापित करने में तकनीकी समस्याएँ आ रही हैं। पुराने जल वितरण नेटवर्क में सुधार करना और नई जल आपूर्ति प्रणालियों का निर्माण करना तकनीकी दृष्टिकोण से चुनौतीपूर्ण है।



जन जागरूकता और भागीदारी:

जल जीवन मिशन की सफलता के लिए केवल सरकार के प्रयास ही पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि स्थानीय समुदायों की जागरूकता और सक्रिय भागीदारी भी आवश्यक है। यदि ग्रामीणों में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता नहीं बढ़ाई जाती, तो जल का उपयोग अधिक होगा, और मिशन की सफलता में बाधाएँ आएँगी।

इन सभी चुनौतियों के समाधान के लिए राज्य में कई प्रयास किये जा रहे हैं, जैसे जल पुनर्चक्रण परियोजनाएँ, पाइपलाइन नेटवर्क का विस्तार और जलाशयों की सफाई। इसके अलावा, जल के सही उपयोग के लिए स्थानीय समुदायों को प्रशिक्षित किया जा रहा है ताकि हर व्यक्ति जल की महत्ता को समझे और उसका सही उपयोग करे।

राजस्थान में जल जीवन मिशन में हडको का योगदान

जल जीवन मिशन को 50% केंद्रीय हिस्से और 50% राज्य के हिस्से से वित्त पोषित किया जाना है। हडको ने राजस्थान में महत्वाकांक्षी

"जल जीवन मिशन " कार्यक्रम के तहत राज्य के हिस्से के लिए चरण- I, चरण- II के तहत कुल 8667.51 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता को मंजूर किया है। हडको ऋण का उपयोग सुनिश्चित करने के लिए हडको द्वारा नियमित साइट निरीक्षण भी किया जा रहा है।



जल जीवन मिशन न केवल जल आपूर्ति की समस्या का समाधान है, बल्कि यह जल संरक्षण के प्रति जागरूकता और सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है। राजस्थान में इस मिशन की सफलता न केवल राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन स्तर को सुधारने में मदद करेगी, बल्कि यह पूरे देश के लिए एक प्रेरणा बनेगी।

हुकुम सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक - परि

हडको की यात्रा: एक खास याद

प्रशिक्षण का पहला दिन आया,
टीम बिलिंग संग खेल सिखाया।
नई पहचान, नई थी बात,
बड़ा विश्वास, जुड़ गए साथ।

हडको के विभागों से ज्ञान का दीप जलाया,
एचआर, कानून, बजट समझाया।
वित्त, परामर्श और विकास के रंग,
हर सीख से मन में बजा एक संग।

दिल्ली की गलियों में घूमने गए,
लोटस मंदिर, दिल्ली गेट देख आए।
इतिहास की खुशबू संग बसी,
यादों की पोटली मन में भरी।

बारह दिन बाद हम जयपुर पहुंचे,
हवा महल, किले भी देखे।
गुलाबी नगर का अनोखा नज़ारा,
संस्कृति का सुंदर उजियारा।

हडको के जयपुर कार्यालय में स्वागत खास,
डिजिटल बोर्ड पर लिखा उल्लास।
साथी अधिकारी, स्टाफ सभी,
स्नेह से भरी थी पहली घड़ी।

परियोजनाओं का अध्ययन किया,
वित्तीय सूत्रों का ज्ञान लिया।
मूल्यांकन, संतुलन पत्रों की चाल,
व्यवसाय की हर बारीकी का हाल।

अंतिम दिन था खास हमारा,
प्रस्तुति ने जोश को संवारा।
वरिष्ठों के संग संवाद किया,
सीखने का हर लम्हा याद किया।

अब सोमवार से नया सफर,
हडको संग आगे बढ़।
जयपुर की वो गर्मजोशी,
साथी सहयोग की नई रोशनी।

हडको की यह यात्रा रही प्यारी,
एक खास याद, सुनहरी, न्यारी।

- सुप्रिया

खुशहाल जीवन जीने के साधन

हम जीवन में जो भी करते हैं, खुशी पाने के लिए करते हैं, लेकिन दुर्भाग्य से खुश रहना काफी मुश्किल काम लगता है। हमें लगता है कि खुश रहने के लिए कुछ खास तरह के हालात होने चाहिए, तभी हम खुश रह सकते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है, जब आप बुनियादी रूप से खुश होते हैं, जब आपको खुश रहने के लिए कुछ करना नहीं पड़ता, तब आपके जीवन के हर आयाम में बदलाव आ जाता है इससे आपके अनुभवों में और खुद को व्यक्त करने के तरीकों में बदलाव आ जाएगा। आपको पूरी दुनिया बदली हुई लगेगी। आपका अब कोई निहित स्वार्थ नहीं होगा क्योंकि चाहे आप कुछ करें या न करें, चाहे आपको कुछ मिले या न मिले, चाहे कुछ हो या न हो, आप स्वभाव से ही आनंदित होंगे। जब आप अपने स्वभाव से ही खुश होते हैं, तो आप जो भी करेंगे, वह बिल्कुल अलग



स्तर पर होगा।

1. ध्यान रखें कि खुश रहना आपकी बुनियादी जिम्मेदारी है

किसी इंसान की पहली और सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी एक खुशमिजाज प्राणी होने की है।

खुश रहना जीवन का चरम पहलू नहीं है। यह जीवन का बुनियादी पहलू है। अगर आप खुश नहीं हैं, तो आप अपने जीवन में क्या कर सकते हैं? यदि आप खुश हैं तभी दूसरी महान संभावनाएं खुलती हैं।

2. पहचानें कि खुशी आपकी मूल प्रकृति है

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप अपने जीवन में क्या कर रहे हैं, चाहे वह कारोबार हो, सत्ता, शिक्षा या सेवा, आप ऐसा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि आपके भीतर कहीं गहराई में एक भावना है कि इससे आपको खुशी मिलेगी। इस धरती पर हम जो कुछ भी करते हैं, वह खुश रहने की इच्छा से करते हैं, क्योंकि यह हमारी मूल प्रकृति है। जब आप बच्चे थे, तो आप यूँ ही खुश थे। वही आपकी प्रकृति है। खुशी का स्रोत आपके भीतर है, आप उसे हमेशा के लिए एक जीवंत अनुभव बना सकते हैं।

3. चीजों का महत्व पहचानें

आज सुबह, क्या आपने देखा कि सूर्य बहुत अद्भुत तरीके से उगा? फूल खिले, कोई सितारा नीचे नहीं गिरा, तारामंडल बहुत अच्छी तरह काम कर रहे हैं। सब कुछ व्यवस्थित है। आज समूचा ब्रह्मांड बहुत बढ़िया तरीके से काम कर रहा है मगर आपके दिमाग में आया एक विचार आपको यह मानने पर मजबूर कर देता है कि आज बुरा दिन है।

आपके दिमाग में आया कोई विचार या आपके मन की कोई भावना फिलहाल आपके अनुभव की प्रकृति को तय करती है। और यह भी हो सकता है कि आपके विचार और भावना का आपके जीवन की सीमित हकीकत से कोई लेना

- देना न हो। पूरी सृष्टि बहुत अच्छे तरीके से घटित हो रही है मगर सिर्फ एक विचार या भावना सब कुछ नष्ट कर सकती है।

4. मन या दिमाग को उसके असली रूप में देखें

जिसे आप कहते हैं 'मेरा मन', वह असल में आपका नहीं है। आपका अपना कोई मन नहीं है। कृपया इस पर ध्यान दें। जिसे आप मेरा ' कहते हैं 'मन, वह बस समाज की देन है। कोई भी और हर कोई जो आपके पास से गुजरता है, वह आपके दिमाग में कुछ न कुछ डाल जाता है। आप वाकई यह चुन नहीं सकते कि किससे आपको चीजें ग्रहण करनी हैं और किससे नहीं करनी। अगर आप कहते हैं, 'मुझे यह व्यक्ति पसंद नहीं है', तो आप किसी भी और से ज्यादा उस इंसान से ग्रहण करेंगे। आपके पास कोई चारा नहीं है। अगर आपको इस बात की जानकारी हो कि उसे ठीक करके कैसे इस्तेमाल करना है, तो यह उपयोगी हो सकती है।

5. पाने की कोशिश न करें, अभिव्यक्त करना शुरू करें

आज हम इतने जोरशोर से खुशी की तलाश कर रहे हैं कि धरती का जीवन ही खतरे में पड़ गया है। खुशी की तलाश में न रहें। दुनिया में अपनी खुशी को अभिव्यक्त करना जानें। अगर आप मुड़कर अपने जीवन को देखें तो आपके जीवन के सबसे खूबसूरत पल वे थे जब आप अपनी खुशी को अभिव्यक्त कर रहे थे, न कि जब आप उसकी तलाश कर रहे थे।

जो आप बचाते हैं, वह कभी आपका गुण नहीं होगा। जो आप फैलाते हैं, जो आप बिखेरते हैं, वह आपका गुण होगा। अगर आप अपनी खुशी को बचाबचा कर रखेंगे, तो जीवन के अंत में कोई ऐसा नहीं कहेगा, 'उसने अपने अंदर खुशी का एकएक अंश बचा कर रखा-', वह बहुत खुशी के साथ रहता था। वे कहेंगे, 'यह प्राणी अपनी जिंदगी में कभी मुस्कराया तक नहीं। लेकिन ' अगर आप हर दिन अपनी खुशी और प्यार को फैलाएं, तो लोग कहेंगे, 'अरे वह एक खुशमिजाज और प्यार करने वाला इंसान था।'



6. मुस्कराइए

सुबह जब आप उठते हैं, तो पहली चीज आपको यह करनी चाहिए कि आप मुस्कराएं। किस पर? किसी पर नहीं। क्योंकि आप जगे, यह कोई छोटी बात नहीं है। लाखों लोग जो कल रात सोए थे, आज नहीं उठे, मगर आप और मैं उठे। क्या यह बहुत बढ़िया बात नहीं है कि आप जगे? इसलिए अपने जगने पर मुस्कराइए। इसके बाद आसपास देखिए और - अगर कोई है, तो उन्हें देख कर मुस्कराइए। यह सबसे कीमती चीज है कि आप जीवित हैं - और जो भी आपके लिए मायने रखता है, वह

जीवित है। इसका महत्व समझें और कम से कम मुस्कराएं। कुछ लोगों को प्यार से देखना सीखें।



7. खुद को याद दिलाएं

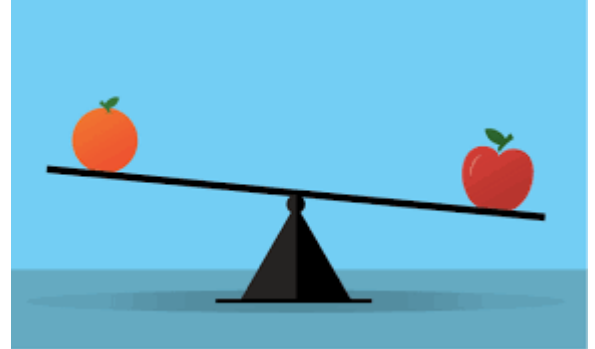
जीवन की अहमियत याद रखें। हर आधे घंटे में खुद को याद दिलाएं - 'मैं जीवित हूँ', 'तुम जीवित हो। और क्या चाहिए?'

8. जो अंदर है, उसे बदलें

वर्तमान में, आपके जीवन की गुणवत्ता उन कपड़ों से तय नहीं होती, जो आप पहनते हैं। वह आपकी शैक्षिक योग्यताओं, आपकी परिवार की स्थिति या आपके बैंक बैलेंस से तय नहीं होती। आपके जीवन की गुणवत्ता इस पर निर्भर करती है कि आप अपने भीतर कितने शांत और खुश हैं।

9. दूसरों से तुलना करना छोड़ दें

ज्यादातर लोग इसलिए दुखी नहीं होते क्योंकि उनके पास किसी चीज की कमी होती है। वे दुखी इसलिए होते हैं क्योंकि वे खुद की तुलना किसी और से करते हैं। आप एक मोटरबाइक चला रहे हैं, आप किसी को मर्सिडीज चलाते देखते हैं और खुद को दुखी कर लेते हैं।



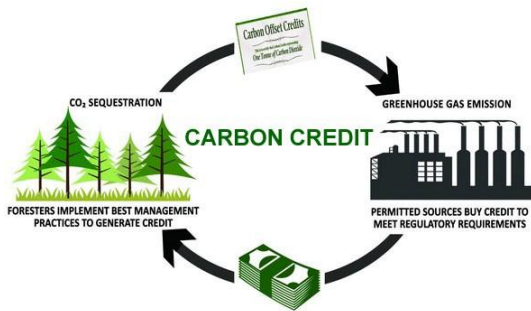
जो लोग खुश रहने के लिए बाहरी हालात पर निर्भर रहते हैं, वे कभी अपनी जिंदगी में सच्ची खुशी नहीं महसूस कर पाएंगे। जीवन के अपने अनुभव से आप साफसाफ देख सकते हैं कि - सच्ची खुशी आपको तभी मिलती है, जब आपके अंतर्मन में बदलाव आता है। जब आप खुश होने के लिए बाहरी स्थितियों पर निर्भर होते हैं, तो आपको समझना चाहिए कि बाहरी हालात कभी भी सौ फीसदी आपके अनुकूल नहीं होते। अगर आप अपने अंदर उस तरह होते हैं, जिस रूप में आप खुद को रखना चाहते हैं, तो आप कुदरती तौर पर खुश होंगे। यह कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसे आपको खोजना पड़े। अगर आप अपनी मूल प्रकृति में वापस चले जाते हैं, तो आप सिर्फ खुश ही रहेंगे।

हर्ष पसरीजा

उप महाप्रबंधक - वित्त

कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग स्कीम

- **कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग स्कीम (CCTS)** एक बाजार आधारित तंत्र है जिसे भारतीय कार्बन बाजार (ICM) के तहत कार्बन क्रेडिट को विनियमित करने और व्यापार करने के लिये शुरू किया गया है। CCTS का उद्देश्य ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन का मूल्य निर्धारण करके और कार्बन व्यापार को सुविधाजनक बनाकर भारतीय अर्थव्यवस्था को कार्बन मुक्त बनाना है।



- **प्रदर्शन, उपलब्धि और व्यापार (PAT)** योजना से CCTS में परिवर्तन: PAT योजना ऊर्जा बचत प्रमाण पत्र (ESCerts) के माध्यम से ऊर्जागहन उद्योगों में ऊर्जा दक्षता सुधार पर केंद्रित है। CCTS, PAT का स्थान लेता है, जिससे ऊर्जा तीव्रता से ध्यान हटाकर GHG उत्सर्जन तीव्रता को कम करने पर केंद्रित हो जाता है, तथा प्रति टन GHG समतुल्य उत्सर्जन की निगरानी की जाती है। यह कार्बन क्रेडिट प्रमाण पत्र (CCC) जारी करता है, जिनमें से प्रत्येक एक टन CO2 समतुल्य कमी को दर्शाता है।

- **तंत्र:** CCTS व्यापक कार्बन कटौती प्रयासों को सुनिश्चित करने के लिये दो प्रमुख तंत्रों के माध्यम से कार्बन मूल्य निर्धारण शुरू करता है:—
 - **अनुपालन तंत्र:** विशिष्ट-क्षेत्र GHG कटौती लक्ष्यों को पूरा करने के लिये ऊर्जा गहन उद्योगों— (जैसे: एल्युमीनियम, सीमेंट, उर्वरक, लोहा और इस्पात) को अधिदेशित करता है। लक्ष्य से अधिक करने वाली संस्थाएं CCC अर्जित करती हैं, तथा लक्ष्य से कम प्रदर्शन करने वाली संस्थाओं को क्रेडिट खरीदना पड़ता है।
 - **ऑफसेट तंत्र:** उत्सर्जन को कम करके कार्बन क्रेडिट अर्जित करने के लिए अनुपालन ढाँचे के बाहर की संस्थाओं को स्वैच्छिक भागीदारी की अनुमति देता है।
 - **चिन्हित क्षेत्र:** CCTS में प्रारंभ में ऊर्जागहन उद्योग जैसे लोहा एवं इस्पात, एल्युमीनियम, सीमेंट, उर्वरक, पेट्रोलियम रिफाइनरियाँ, लुगदी एवं कागज, तथा वस्त्र (भारत के कुल उत्सर्जन में 16 प्रतिशत का योगदान) शामिल हैं। विद्युत क्षेत्र (भारत के GHG उत्सर्जन का 40 प्रतिशत) को बाद में शामिल किया जा सकता है।
 - **नियामक निरीक्षण:** इसका प्रबंधन विभिन्न सरकारी निकायों द्वारा किया जाता है, जिनमें ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (BEE) और भारती कार्बन बाजार के लिये राष्ट्रीय संचालन समिति (NSCICM) शामिल है।
 - **भारत के जलवायु लक्ष्यों में CCTS का महत्व:** भारत का लक्ष्य वर्ष 2030 तक

उत्सर्जन तीव्रता में 45 प्रतिशत की कटौती करना है। CCTS निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देता है, स्वच्छ प्रौद्योगिकियों, नवीकरणीय ऊर्जा और कार्बन कैप्चर को प्रोत्साहित करता है।

- कार्बन मूल्य निर्धारण: कार्बन मूल्य निर्धारण एक आर्थिक रणनीति है जिसके अंतर्गत कार्बन उत्सर्जन की बाह्य लागतों जैसे फसलों को होने वाली क्षति, बढ़ती स्वास्थ्य देखभाल लागत और चरम मौसम के कारण संपत्ति को हानि पर ध्यान केंद्रित करते हुए उन्हें उनके स्रोतों के साथ संबद्ध किया जाता है। इस क्रियाविधि के माध्यम से वित्तीय बोझ का पुनः प्रदूषणकर्ताओं पर आरोपण किया जाता है, तथा उन्हें या तो अपने उत्सर्जन में कमी लाने, प्रदूषण जारी रखने और इसके लिए भुगतान करने, अथवा स्वच्छ प्रौद्योगिकियों में निवेश करने का

विकल्प प्रदान किया जाता है। वर्तमान वैश्विक कार्बन मूल्य निर्धारण तंत्र के अंतर्गत 89 देशों में 12.8 गीगाटन CO₂ (वैश्विक उत्सर्जन का 25 प्रतिशत) शामिल है।

- मूल्य निर्धारण प्रक्रिया: सरकारें कार्बन का मूल्य निर्धारण करने हेतु 3 मुख्य विधियों का उपयोग करती हैं, जिससे न्यूनतम संभव सामाजिक प्रभाव पर उत्सर्जन में कमी सुनिश्चित होती है।
- उत्सर्जन व्यापार प्रणाली (ETS) : इसके अंतर्गत उद्योगों को उत्सर्जन इकाइयों का व्यापार करने की अनुमति प्रदान की जाती है। यह दो तंत्रों के माध्यम से संचालित होता है, कैप-एंड-ट्रेड और बेसलाइन-एंड-क्रेडिट।
- कैप-एंड-ट्रेड में उत्सर्जन पर एक सीमा

CLP 中電

CLP Carbon Credits

WHAT IS A CARBON CREDIT?



निर्धारित की जाती है, जिसके अंतर्गत निर्धारित सीमा से कम उत्सर्जन वाली कंपनियों परमिट का विक्रय कर सकती हैं, जबकि निर्धारित सीमा से अधिक उत्सर्जन वाली कंपनियों के लिए परमिट का और अधिक क्रय करना आवश्यक होता है।

- जबकि बेसलाइन-एंड-क्रेडिट के अंतर्गत उन उद्योगों को पुरस्कृत किया जाता है जो उत्सर्जन को एक निर्धारित आधार सीमा से नीचे लाते हैं, इसके लिये उन्हें दूसरों को क्रेडिट का विक्रय किये जाने की अनुमति प्रदान की जाती है।



- कार्बन टैक्स: ETS के विपरीत, कार्बन टैक्स के अंतर्गत प्रति टन CO₂ पर एक निश्चित कर लगाकर कार्बन उत्सर्जन पर प्रत्यक्ष मूल्य निर्धारण किया जाता है।
- हालाँकि, इस तंत्र से उत्सर्जन में किसी प्रकार की विशिष्ट कमी होना सुनिश्चित नहीं होता है, क्योंकि यह उद्योगों पर निर्भर करता है कि उन्हें उत्सर्जन में कटौती करनी है या कर का भुगतान करना है।
- क्रेडिटिंग तंत्र: इसके अंतर्गत परियोजनाओं के माध्यम से ग्रीनहाउस गैसों में कटौती कर कार्बन क्रेडिट उत्पन्न किये जाने की

अनुमति प्रदान की जाती है, जिसका अनुपालन अथवा स्वैच्छिक शमन उद्देश्यों के लिये घरेलू अथवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विक्रय किया जा सकता है।

➤ CCTS के प्रभावी कार्यान्वयन में चुनौतियाँ:-

लक्ष्य निर्धारण और कार्बन मूल्य निर्धारण: उत्सर्जन में कमी के लक्ष्यों को संतुलित करना महत्वपूर्ण है। उदार लक्ष्यों के परिणाम स्वरूप CCC की अधि आपूर्ति हो सकती है, जिससे कीमतें कम हो सकती हैं, जबकि कठोर लक्ष्यों से अनुपालन लागत और मुद्रास्फीति बढ़ सकती है।

- अनुपालन और प्रवर्तन संबंधी मुद्दे: PAT के तहत, आवश्यक ESCerts में से 50 प्रतिशत हासिल नहीं किया गया तथा उन पर किसी प्रकार की शास्ति भी नहीं अधिरोपित थी, जो CCTS कार्बन बाजार में सख्त अनुपालन और प्रवर्तन तंत्र के अभाव को दर्शाता है जो CCTS को प्रभावित कर सकता है और इसे अप्रभावी बना सकता है।
- CCTS के समक्ष दोहरी गणना अथवा उत्सर्जन की गलत रिपोर्टिंग जैसी समस्याएं हो सकती हैं, जैसा कि वैश्विक कार्बन बाजारों के संदर्भ में सुस्पष्ट होता है।
- क्रेडिट जारी करने में विलंब: 2021 से PAT के तहत क्रेडिट जारी करने में देरी ने बाजार के भरोसे को कम किया है। वर्ष 2021 से PAT के तहत क्रेडिट जारी करने में देरी से बाजार का विश्वास प्रभावित हुआ

है। CCTS के अंतर्गत CCC जारी करने में इसी प्रकार के विलंब से स्वच्छ ऊर्जा में भागीदारी और निवेश में बाधा उत्पन्न हो सकती है।



- पारदर्शिता: उद्योग उत्सर्जन और अनुपालन पर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध आँकड़ों के अभाव से बाजार में विश्वास कम हो सकता है।

➤ भारत किस प्रकार CCTS का सुदृढीकरण कर सकता है:-

- अंतर्राष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं के साथ तालमेल किया जाना : यूरोपीय संघ (EU) की ETS की सर्वोत्तम प्रथाओं जैसे कि क्रमिक रूप से सीमा को कड़ा करना, कार्बन मूल्य स्थिरता उपाय और कठोर अनुपालन रूपरेखा से सीख लेने की आवश्यकता है।
- विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिये MRV (अनुवीक्षण, रिपोर्टिंग और सत्यापन) की क्षमता का निर्माण किया जाना चाहिए।

- सुदृढ ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म: क्रेडिट पर नजर रखने और धोखाधड़ी गतिविधियों के रोकथाम हेतु डिजिटल रजिस्ट्री की शुरुआत की जानी चाहिए।
- व्यापार प्रतिबंधों (उदाहरणार्थ EU का कार्बन बॉर्डर एडजस्टमेंट मैकेनिज्म, CBAM) से संरक्षा हेतु सीमा पर संगतता सुनिश्चित की जानी चाहिए।



- उद्योग की भागीदारी को प्रोत्साहन: शीघ्र अनुपालन करने वालों के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया जाना चाहिए, जैसे अनुपालन आवश्यकताओं से परे उत्सर्जन में कमी करने वाली कंपनियों के लिए कर लाभ।
- हरित प्रौद्योगिकियों, नवीकरणीय ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता सुधार में निवेश को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

रेनू चौधरी
वरिष्ठ प्रबंधक - वित्त

एकत्व का दर्शन महाकुंभ, प्रयागराज 2025 कुंभ मेला-मेरी यात्रा एवं अनुभव

महाकुंभ, प्रयागराज 2025 कुंभ मेला इस बार उत्तरप्रदेश के प्रयागराज में गंगा, यमुना, और सरस्वती नदियों के संगम स्थल पर आयोजित किया गया जो कि 13 जनवरी से प्रारम्भ होकर 26 फरवरी 2025 तक आयोजित हुआ है।



भारतवर्ष में कुंभ मेले का आयोजन आदिकाल से चली आ रही संस्कृति है। कुंभ मेले के आयोजन की मान्यता है कि जब देवताओं और असुरों ने मिलकर समुद्र मंथन किया तब समुद्र से अमृत की प्राप्ति हुई। कहा जाता है कि उसी अमृत की बूंदें पृथ्वी के चार स्थानों में गिरी जो, नासिक, उज्जैन, प्रयागराज और हरिद्वार है। तब से ही यहाँ कुंभ मेले का आयोजन प्रारम्भ हुआ। यह चारों स्थान आदिदेव महादेव के अलग-अलग स्वरूपों के लिए प्रसिद्ध है। कुंभ मेले तीन प्रकार के होते हैं पहले जो हर छः वर्षों में आयोजित होते हैं अर्द्रकुंभ कहलाते हैं, दूसरे जो हर 12 वर्ष में आयोजित होते हैं पूर्ण कुंभ कहलाते हैं और तिसरा यानी महाकुंभ हर 144 वर्ष में

आयोजित होता है जो इस वर्ष 13 जनवरी से प्रारम्भ होकर 26 फरवरी 2025 तक आयोजित हुआ है



इस वर्ष प्रयागराज महाकुम्भ विश्व इतिहास का सबसे बड़ा समागम बन गया है। अद्भुत और अकल्पनीय। क्या किसी ने भी सोचा था कि इस महाकुंभ में इतने हिंदू-श्रद्धालु पहुँचेंगे, न जाति का कोई भेद भाव न पंथ-प्रांत का कोई भेद। जिसमें देश विदेश से लगभग 65 करोड़ से अधिक ने माँ गंगा के पवित्र जल में डुबकी लगाई। जो कि पूरे विश्व को विचित्र सी लगने वाली विशेषता है कि हिंदु समाज की -विविधता में कितनी एकता है। इसी एकता के दर्शन वहाँ हो रहे थे। विश्व आश्चर्यचकित था। हिंदू समाज में कितने ही पंथ हैं। सबके अराध्य भिन्न- भिन्न, त्योहार और पूजा पद्धति भी भिन्न- भिन्न, खानपान और परम्परागत वेशभूषा भी भिन्न है, इतनी भिन्नता होते हुये एकत्व के कुछ तत्व जो सम्पूर्ण देश के हिन्दु समाज को बाँधे रहते हैं, उसी एकत्व के दर्शन हमें इस महाकुम्भ में हुये।

देखा गया कि कुम्भ में हिंदू समाज सदियों से एकत्र होकर समाज के सामने की चुनौतियों और उनके समाधान की दिशा पर विचार-विमर्श करता है इस संदेश को पूरे समाज तक पहुंचाता है वही परम्परा इस बार भी दिखाई दी।



महाकुम्भ में बड़े-बड़े अखाडों में तो चिन्तन-मनन के कार्यक्रम हुये, सर्व समाज की प्रतिनिधि की बैठके हुई। हिन्दुओं की धटती जन्मदर और संस्कारों में आ रही कमी पर चिन्ता व्यक्त की गई एवं हिन्दु समाज में सनातन धर्म के प्रति जागृति की लौह जगाई गई।

महाकुम्भ में सभी समुदाय जातियों के हजारों नागा साधु-संत भी पहुँचे थे प्रयागराज में वहाँ फिर से घोषणा हुई कि सनातन परंपरा में जन्म के आधार पर कोई छोटा बड़ा नहीं होता सब बराबर हैं। सब

में ईश्वर का अंश है।



पूरे माहकुम्भ की अवधि में चले नेत्र कुम्भ में लाखों लोगों की आँखों की जाँच, चश्मा विरतण और नेत्र शल्य चिकित्सा व्यवस्था जैसे सेवा कार्यों का तो विश्व रिकार्ड ही बन गया है। अंधिकाश श्रद्धालु राज्य सरकार द्वारा किये गए प्रबन्ध की प्रशंसा करते दिखाई दिए।



देश भर के विभिन्न अखाडों के नागा साधुओं, अन्य साधु-संतों, महामण्डलेश्वर

आदि द्वारा स्नान के समय निकाली गई शोभायात्राओं की चर्चा सभी समाचार पत्र-पत्रिका और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में लगातार रही। तपस्या करते संत-महात्माओं के साथ ही 10 लाख से ज्यादा कल्पवासियों द्वारा कई-कई दिनों तक साधना करने के समाचार भी खूब छपे। एवं साथ ही विश्व के अनेक देशों के नागरिक भी इस महाकुम्भ में पहुंचे और इसके साक्षी बने कि भारत में इतना बड़ा आयोजन हो रहा है जो कि देखने लायक बनता है।



विश्व के सबसे बड़े धार्मिक आयोजन प्रयागराज महाकुम्भ में इस बार अनोखी सामाजिक एवं पर्यावरण युक्त क्रांती देखी गई। महाकुम्भ स्थल पर प्लास्टिक और डिस्पोजल कचरे की मात्रा नगण्य देखी गई यह बदलाव आया **एक थैला, एक थाली अभियान** से जिसने इस विशाल आयोजन को पूर्णरूप से हरित और स्वच्छ बनाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। महाकुम्भ के दौरान 43 राज्यों के 7 हजार से अधिक संग्रहण केंद्रों के माध्यम से 14.17 लाख थालियाँ, 13.46 लाख कपड़े के थैले, तथा

2.63 लाख गिलास का उपयोग किया गया इस पहल से प्लास्टिक के पतल-दोना, गिलास का उपयोग लगभग 70-75 प्रतिशत घटा अगर यह पहल नहीं होती तो लगभग 40 हजार टन अधिक कचरा होता। साथ ही कुंभ स्थल पर सेवारत कार्यकर्ताओं द्वारा यह संदेश भी दिया गया कि **“उतना ही लो थाली में व्यर्थ न जाए नाली में”** जिससे भोजन के दौरान होने वाली झूठन में 70 प्रतिशत की कमी आई।

इस महाकुम्भ के दौरान मां गंगा के पवित्र जल में डूबकी लगाने वाले 65 करोड़ में से एक भी व्यक्ति को नहीं लगा कि गंगा जल में दुर्गंध है या जल गंदा है बल्कि इस आस्था के संगम में डूबकी लगाकर अपने आप को धन्य मान रहे हैं। ऐसे अमृत तुल्य पवित्र जल को भी सीवेज यानी गटर जैसा दूषित जल बताने वाले राष्ट्रीय हरित टिब्यूनल पर क्या टिप्पणी की जाये। अच्छा हुआ जो पद्म श्री डा अजय सोनकर जैसे कई वैज्ञानिकों ने सामने आकर उक्त टिब्यूनल के दावे को चुनौती देते हुए गंगा जल को शुद्ध और निर्मल बताया है।

यह महाकुम्भ भारत में नहीं अपितु पुरे विश्व में एक हिंदुत्व एवं सनातन धर्म की एक पहचान बन गया है।

अनिल कुमार खण्डेलवाल
(वरिष्ठ प्रबन्धक – वित्त)

दूसरों को माफ करके आप खुद को भी तोहफा देते हैं।

पहला, अपने जीवन की प्राथमिकता अपने कर्म और अपने संस्कारों को बनाएं। बातें आएंगी, लोग हमेशा हमारे साथ परफेक्ट व्यवहार नहीं करेंगे। लेकिन याद रखिए, वो तमाम बातें या वो लोग हमारे साथ नहीं जाने वाले हैं, जो उन्होंने आज किया वो भी नहीं जाने वाला है। लेकिन उनके बारे में हमने जो आज सोचा, वो हमारे साथ जाने वाला है। क्या ये संभव है कि कोई हमारे साथ गलत करे और हम उनके लिए अच्छा सोचें ? क्या ये संभव है कि कोई हमारे साथ गलत करे हम उनको दुआएं दें? इस पर विचार करें क्योंकि इसी से आपका जीवन बदलेगा।

चलिए आज थोड़ा आत्म-विश्लेषण करते हैं। एक बार देखिए कि आपने कितनी बातें पकड़कर रखी हुई है। 'इसने वो किया, उसने ये किया, इसने उस दिन मेरे साथ ऐसा किया, उसने पिछले साल ऐसा किया, उसने उस दिन बुलाया था, ठीक से बात नहीं की, उस दिन उसने फोन नहीं किया'। ऐसी न जाने कितनी सारी बातें हैं, जिन्हें हमने मन में पकड़कर रखा हुआ है। अब अपने आपसे पूछिए कि इसमें से कौन-सी ऐसी बात है, जो मेरे साथ आगे जाने लायक है। अगर नहीं है तो खत्म कब करना होगा? शरीर तो कभी भी छूट सकता है। इसका मतलब ये नहीं कि हम सारा दिन सोचते हैं कि मैं मरने वाला हूँ, नहीं। इसका मतलब है कि हम सदा तैयार रहते हैं कि आत्मा किसी भी क्षण शरीर छोड़ सकती है। इसलिए मुझे जो कुछ यहां छोड़ना है वो अभी छोड़ना है, मुझे समय नहीं मिलेगा बीच में छोड़ने के लिए। अगर

मैंने शरीर छोड़ने से पहले उन बातों को नहीं छोड़ा, तो वो बातें मेरे साथ जाती हैं और मेरा नया भाग्य उन बातों के साथ शुरू होता है।

दूसरों को दोष देना आसान है। अपनी जिंदगी में आने वाली परेशानियों का दोष भी दूसरों के सिर पर मढ़ा जा सकता है। लेकिन क्या आप सकारात्मकता का प्रसार कर सकते हैं? बाग में खुशबू फैलाने के लिए आपको फूल बनना पड़ेगा। लेकिन फूल बनने की यात्रा आसान नहीं है। ध्यान के जरिए इसका अभ्यास करना पड़ेगा और अमल में लाना होगा।

जब कोई हमारे साथ कुछ गलत करता है तो यह गलत कर्म उनका है। फिर उसके बाद हम सोचते रहते हैं कि उन्होंने ऐसा क्यों किया, उनको ऐसा नहीं करना चाहिए था। उन्होंने निगेटिव किया, हम दुःखी हुए, परेशान हुए तो हमने भी नकारात्मक प्रतिक्रिया दी। उन्होंने नकारात्मक कर्म किया, हमने भी नकारात्मक सोचा, ऐसे में हमारी नकारात्मक सोच की उर्जा कहाँ गई? उन्हीं के पास गई, जो पहले से ही हमारे प्रति नकारात्मक थे। ऐसे में नकारात्मकता का स्तर बढ़ जाता है। अब आपको व्यवहार बदलना है। उन्होंने हमारे साथ गलत किया, लेकिन हमने 15-20 दिन हर रोज सोने से पहले उनको दुआएं दी। अपनी शुद्धतम उर्जा उनकी तरफ भेजी। अगर मेरी नकारात्मकता उनकी नकारात्मकता बढ़ा सकती है, तो उन्हें पॉजिटिव नहीं कर सकती है? आप सोचिए कि कौन-सा वाला विकल्प चुनना है।

संस्कार जाते समय पैदा नहीं किए जाते हैं। वो जीते हुए हमारे पास होने चाहिए। लेकिन उसके लिए हर रोज परमात्मा का जो सबसे बड़ा तोहफा हमें मिलता है वो है ज्ञान। जैसे हमारी सबसे बड़ी गिफ्ट जो हमारे बच्चों को मिलती है, वो होती है हमारी राय, हमारी समझ, हमारे अनुभव। आप अपने बच्चे को क्या कहते हैं गलती मत कर, मेरे अनुभव से सीख लें। वो ऐसे प्यार से सुनता है फिर वो अपनी करने जाता है। परमात्मा हमें ज्ञान देते हैं लेकिन ज्ञान के साथ हमें चाहिए शक्ति, उस ज्ञान को धारण करने के लिए। क्या यह संभव है कि कोई हमारे साथ गलत करें हम उनको दुआएं दें।

आप सिर्फ एक संकल्प करें कि परमात्मा की शक्ति मुझ पर और मुझसे होती हुई हर उस व्यक्ति की तरफ जा रही है जो मेरे संपर्क में है। मेरे परिवार के लोग, मेरे दोस्त, मेरे रिश्तेदार, मेरे सहकर्मी, मेरे पड़ोसी, मेरी तरफ से हर आत्मा के प्रति सिर्फ और सिर्फ दुआएं। अब इसको भी रोज करना है। रोज सुबह दिन की शुरुआत इससे करनी चाहिए। ताकि जिनके साथ हम जुड़ने वाले हैं, जिनके साथ हम मिलने वाले हैं, बात करने वाले हैं, उनके साथ सकारात्मकता का रिश्ता कायम हो। आप इस बात पर ध्यान दीजिए कि हम सोचकर कोई गलत कदम नहीं उठाते। लेकिन जरा-सा गुस्सा आया, जरा-सी बात बुरी लगी और हमारे मन-वचन-कर्म में नकारात्मकता आ जाती है। हम कुछ ऐसा बोल देते हैं, कुछ ऐसा सोच लेते हैं, कभी-कभी दूसरों की निन्दा

भी कर देते हैं। ये ऐसे क्यों है। यह भी एक गलत कर्म है। और अगर दूसरा कह रहा है कि फलां व्यक्ति ऐसा क्यों है और उनके सुनने के बाद हमने सिर्फ हां में सिर हिला दिया, तो वो एक गलत कर्म है। क्योंकि हमने गलत का समर्थन किया। वो भी हमारा गलत कर्म है।

हमेशा याद रखना है गांठें अगर मन में बनाकर रखीं तो जब आत्मा शरीर छोड़ेगी तो गांठें साथ ही जाएंगी। वो जो आज हमें तंग कर रहे हैं ये वो हैं, जिनके साथ पिछली बार हम गांठें खोलकर नहीं आए थे। इसलिए तो वो हमारे सामने आए हैं। अगर हम इस बार भी गांठें नहीं खोलेंगे, अगर इस बार भी हम दुआएं देकर हिसाब-किताब को ठीक नहीं करेंगे तो हम फिर मिलेंगे और जब हम फिर मिलेंगे तो मुश्किलें इस बार से भी ज्यादा बड़ी हुई होंगी। हिसाब-किताब कैरीफॉवर्ड-कैरीफॉवर्ड होता जा रहा है। खोलो उसको एक सेकंड में पूर्ण विराम लगाओ और खत्म करो, फिर गलती चाहे कितनी भी बड़ी हो।

एक बार जब आप अपनी सोच में परिवर्तन ले आते हैं, तब सामने वाले की नकारात्मकता में भी आपको सकारात्मकता दिखने लगती है।

शैलेन्द्र सिंघवी
(उप प्रबन्धक -वित्त)

मर्द है तू.....

घर की छत पर 300-400 हरे-भरे छोटे-बड़े लहराते पौधों की हरियाली अनायास हर किसी को दूर से ही दिल से आकर्षित कर लेती थी। हरा रंग आंखों और मन को बहुत सुकून और राहत देता है लेकिन आज पौधों को पानी देते हुए पानी का फव्वारा कब उसके चेहरे की ओर मुड़ गया उसे खुद नहीं पता... लाल और गहरी सुर्ख आंखों से निकलने वाले मोती पानी की बूंदों में छिपने की जबरदस्ती कोशिश कर रहे थे किंतु छिप नहीं पा रहे थे। ज्यों-ज्यों आंखों से बूंदे गालों पर टपकी त्यों-त्यों जिंदगी के पिछले पन्ने अपने-आप पलटने लगे....



खुद के समाज की रूढ़िवादी परम्पराओं को एक तरफ रखते हुए बड़े संघर्ष से सुलेखा ने एम. ए. पास तो कर लिया क्योंकि जब तक ब्याह नहीं हो तो घर बैठना भी बेटियां बला लगने लगती हैं। एक ओर स्वावलम्बी बनने की मानसिक कशमकश उसे भीतर तक पीड़ा दे रही थी तो दूसरी ओर उसकी शादी के लिए परिवार में जद्दोजहद शुरू हो गई थी। मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए सबसे बड़ी समस्या यह है कि, ना तो अपने से ऊपर

जीवन-स्तर वाले जैसा बन पाते हैं और ना ही नीचले जीवन-स्तर वालों की तरह दिखना चाहते हैं। इसी कशमकश में धुरी वहीं की वहीं द्वंद्व में घूमती रहती है।

यहां मैं इस बात पर जोर दे रही हूँ कि सभी लोग एक जैसे नहीं होते हैं लेकिन बहुतेरों बार मैंने देखा है कि दहेज या उपहार ही कह लीजिए, यह जीवन स्तर को बेहतर बनाने और मोटी रकम वसूलने का अच्छा और आसान जरिया है। दहेज की कमी भी अच्छी और समय पर शादी हो जाने में कभी-कभी अड़चने पैदा कर देती है। सुलेखा के साथ भी उस समय कुछ ऐसा ही हुआ था।

बहुत मेहनत के बाद जैसे-तैसे सुलेखा की अच्छी नौकरी लगी। अब अच्छे रिश्ते आने लगे थे। शायद नौकरी और अच्छे वेतन के आकर्षण से रितेश के परिवार के सदस्यों ने शादी के लिए हामी भर दी। सपनों पर हमेशा दाग लग जाते हैं शायद ही कभी पूरे होते हैं जैसा हम सोचते हैं वैसा तो कभी होता नहीं। सुलेखा के घर वाले भी रितेश की सरकारी नौकरी होने से बहुत खुश थे। बजट के अनुरूप शादी की तैयारियां हो चली थी। बीच-बीच में सगाई तोड़ने की धमकियों के साथ दिन-दिन मांगों की सूची और पूर्ति बढ़ती गई और शादी का दिन नजदीक आ ही गया।

बारात तोरण द्वार तक पहुँच चुकी थी। नेक रस्मों के बीच घर की एक-एक महिलाएं जब आरती, तिलक और नेक के लिए पहुँची तो गूँजती आवाजों ने हँसी-खुशी का समा बांध दिया...नाक बचा रितेश... नाक बचा... झुकना मत... नाक नीची मत करना अभी झुक गया

तो हमेशा झुकता ही रहेगा। रितेश नाक बचाने के चक्कर में अधिक अकड़ कर, खुद को पीठ सहित पीछे की ओर जरूरत से अधिक झुका लिया जिससे उसका शारीरिक संतुलन बिगड़ गया, वो तो सभी ने संभल कर उसे पकड़ लिया और जमीन पर गिरने से बचा लिया।



सभ्य समाज के सभ्य और उच्च शिक्षित लोगों के मध्य आयोजित शादी जैसे समारोह में कभी-कभी खुद को एक सुसंस्कृत परिवार व समाज के मध्य खड़ा महसूस करते हुए गर्व का अनुभव होता है लेकिन माहौल के भीतर की गहराई तक जाकर देखने पर बहुत कुछ सोचने को मजबूर कर देता है। ऐसा लगता है, मानवीय मूल्यों में हम बहुत अधिक गिर चुके होते हैं लेकिन वहीं के वहीं शालीनता के आवरण की आड़ में अड़ कर खड़े रहने में शर्म भी महसूस नहीं करते हैं।



मर्द है तो क्या! बड़ी सोचने वाली बात है कि किसने यह सब अधिकार दे दिए हैं पुरुष को, कोई दायरा नहीं या कोई मर्यादा भी नहीं। यह सब तो छोड़िए, औरत का स्वाभिमान और सम्मान भी इस मर्द शब्द की गहरी खाई में क्यों डूबो दिया जाता है? उसके आत्म सम्मान और मान-आदर का तिरस्कार बार-बार किया जाता है। जीवन भर इसी शब्द की आड़ में नारी सताई जाती है। सभी एक जैसे नहीं होते हैं लेकिन सभ्यता के पर्दे के पीछे छिपे ऐसे मर्द क्या वाकई मर्द कहलाने लायक भी है।

लड़की को उसके लिए प्रथम पाठ – सहनशक्ति, सेवा, प्रेम, दया, ममता, समर्पण, धीरता....और भी....ना जाने क्या...क्या....लेकिन लड़के को उसके लिए प्रथम पाठ – मर्द है तू... परोस दिया जाता है।



धीरता...धीरता करते-करते जिंदगी की शाम कब ढल गई सुलेखा को आभास ही नहीं हुआ। यादों के पिछले पन्ने पलटते गए। सुबह 4 बजे उठना और रात ग्यारह बजे बाद तक सोना। बच्चों को नहलाने-धुलाने, नाश्ता, खाना, बच्चों को क्रेच छोड़ना-लाना, समय चक्र के साथ आगे फिर स्कूल छोड़ना-लाना... बच्चों की उच्च शिक्षा का भार, घर-बाहर की सैकड़ों जिम्मेदारियों, दायित्वों व कर्तव्यों व नौकरी की भागम-भाग की धुरी में ही घूम गई। इन सबके बीच सामंजस्यता बिल्कुल भी आसान नहीं थी फिर भी उसने अपनी सकारात्मक सोच, अनुशासन और टाईम मैनेजमेंट से किसी को शिकायत तक करने का मौका नहीं दिया क्योंकि वह नहीं चाहती कि नौकरी वाली बहू की आड़ में उसे रोज ताने सुनने को मिलें। यही सोचकर उसने घर-परिवार के सदस्यों के लिए अपनी शारीरिक और मानसिक स्थिति के सामर्थ्य व क्षमता से अधिक बेहतर से बेहतर करने का प्रयास किया लेकिन फिर भी कोई आज तक संतुष्ट नहीं रहा। रितेश को भी सप्ताह के दो अवकाश मिलते थे, उनको भी वह 15 घंटे बिस्तर पर और बाकी के घर से बाहर घूमने और सुलेखा की गलतियां निकालने में ही बीता देता था। सुलेखा का एटीएम कार्ड भी वह खुद ही रखता। महीने की पाँच-सात तारीख तक सब पैसे खत्म। पैसे की जरूरत हो तो उसके पास एक ही जवाब होता—मैं कहाँ से लाऊँ! मैं क्या करूँ! चोरी करूँ या डाका डालूँ!



आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। सुलेखा के बिल्कुल विपरीत रितेश का रूटीन रहा है। दोनों को ऑफिस जाना होता था लेकिन रितेश नाश्ता/खाना कर नहा-धोकर तैयार होकर ऑफिस चला जाता था और देर रात घर में घुसता खाना खाकर सो जाता। लगता रितेश घर पर नहीं सराय में आता है। घर की व्यवस्था कैसी चल रही है? बच्चों की फीस-पढ़ाई, घर खर्च कैसा चल रहा है? उसे कोई सरोकार नहीं था। बच्चों की स्कूल से टीसी कटें या पेनल्टी लगे या बच्चों का स्कूल-कॉलेज में एडमिशन मिले या नहीं मिलें, बच्चों के भविष्य तक से उसे कोई सरोकार नहीं था।

हिम्मत नहीं हार कर के उसने खुदको नई-नई हॉबिज के सांचें में ढाल लिया। बच्चे भी बड़े हो रहे थे उच्च शिक्षा आजकल सस्ती नहीं रही है। रितेश की ओर से आगे होकर पैसे या काम के लिए कोई मदद कभी नहीं मिली थी। सुलेखा बागवानी, पेंटिंग, मेहंदी और संगीत आदि का सहारा लेकर स्वयं को संतुलित व स्थिर रखने की भरपूर कोशिश करती आई है। रितेश व घर के सदस्यों का व्यवहार दिन-प्रतिदिन क्रूर से क्रूर, स्वार्थी और लालची पूर्णतः झलकित हो चला था।

इन सबमें मानसिक तनाव में रहकर यदि कोई औरत पति के रवैये के प्रति अपने विचार या सही बात रख भी दें तो अंगुली उसी की तरफ उठती है। सारे प्रश्न औरत की तरफ ही उड़ते हुए आते हैं। बस यही स्थितियां दबाव और अधिक दबाव पैदा कर देती हैं। अन्ततः यदि आवाज उठा ले या जवाब दे दे तो

कुलक्षणी व बर्बादी बन जाती है औरते मर्दों के लिए।

वाहियात मानसिकता में पले-बढ़े पुरुष यदि समय के साथ अपने विचार नहीं बदल पाते हैं तो कम से कम सारा का सारा दोष या कमियां अपनी पत्नियों में ढूंढना बंद करें और उसे कंधा से कंधे मिलाकर सहयोग करें तो जीवन की तस्वीर ही अलग उभर कर आ सकती है। औरत ही औरत का सहयोग नहीं करें तो फिर पुरुषों से उम्मीद कैसी! क्यों नस-नस में रमा दिया जाता है? क्यों दिल-दिमाग में सिखा दिया जाता है? और बार-बार बोला भी जाता है मर्द है भई तू....! क्यों भूल जाते हैं मर्द भी मर्द से पहले एक स्त्री की भांति एक इंसान की श्रेणी में ही आता है।



सुलेखा सुबक-सुबक रही थी। 15 वर्ष से अधिक हो गए थे शायद ही रितेश उसके पास कभी आत्मियता से बैठा होगा या सुख-दुःख बांटा होगा। ज्यों-ज्यों जिम्मेदारियां व दायित्व बढ़े त्यों-त्यों रितेश ने सुलेखा व बच्चों से दूरियां बढ़ा ली थी। पड़ोसिनों से बात करें तो दिक्कत, पौधे संभाले तो दिक्कत, जिम्मेदारियों व दायित्वों पर ध्यान रखे तो दिक्कत, बच्चों का पसंद का बनाए तो दिक्कत... घर में कुछ भी आवश्यकता हो तो दिक्कत... पैसे मांगे तो दिक्कत....। यह स्पष्ट रूप से औरत के प्रति

भाविक प्रताड़ना है जो औरत हर बार सहती आई है।

सुलेखा को अब आगे-पीछे बस बच्चों का हित ही दिख रहा था। रितेश के व्यवहार और बजट के कारण घर पर काम वाली बाई भी कभी नहीं रखी। घर का सारा काम खुद ही करके समय निकाल कर सुलेखा जोड़-तोड़ में लगी रहती थी। रितेश के दोहरे नहीं तिहरे चेहरे पर सुलेखा और बच्चे अचंभित होते थे। पत्नी व बच्चों के सामने अलग रूप.... घर और रिश्तेदारों के सामने भिन्न रूप और ऑफिस में विशेष पहचान! यह कैसा चरित्र कि रितेश के मासूम चेहरे के पीछे और भी कोई रूप हो तो पहचानना अब भी नामुमकिन सा लगता है।



संतुलन के साथ खर्चा और कर्जा से उसने बच्चों की कैसे शिक्षा पूरी की यह सुलेखा ही जान सकती थी। मर्द होने का दंभ यदि पुरुष रखेगा तो सुखद परिवार कैसे रहेगा। सुलेखा की सिसकियां रुक नहीं रही थी। सुलेखा के हाथ का खाना और भिन्न-भिन्न व्यंजनों के लिए पास-पड़ोसी भी तारीफ करते थकते नहीं थे लेकिन सालों से चला आ रहा है रितेश का घर पर खाना खाने का मन हो तो खाता नहीं

तो नहीं खाता। घर पर कभी-कभार ही वह खाना खाता था। उसके हिस्से का बना खाना, भोजन की दूसरी पारी में सुलेखा और बच्चों के ही हिस्से आता क्योंकि अन्न का अपमान नहीं किया जा सकता। यदि खाना खाता भी तो पहले खुद की पसंद की चीजे ऑवर ईटिंग करके खा लेता किसी के लिए बचे या न बचे उसे कोई सरोकार नहीं रहता। इतने वर्ष बीत गए एक शब्द भी कभी सुलेखा के लिए उसके मुँह से अच्छा नहीं निकला होगा। सुलेखा जैसे रितेश की पत्नी नहीं कोई प्रतिस्पर्धी या दुश्मन हो।

सचमुच! परिवार से ज्यादा जब अहम्, स्वार्थ और पैसे की ही अहमियत हो जाती है तब आपसी इज्जत, सम्मान, मर्यादा व सिद्धान्त सब बदल जाते हैं। खुद को ही खत्म कर लेना या रितेश को अब इस उम्र में आकर छोड़ देने में किसी का हित दिखाई नहीं दे रहा था। ऑसूओं को हथेली से पोंछते हुए सुलेखा ने अब निश्चय कर लिया कि चाहे कोई उसकी भावनाओं और संवेदनाओं की कद्र करे या ना करें, अब वह खुद के लिए भी जिएगी। उसे खुशी थी बच्चे भी उसकी बात से सहमत थे।

औरत के प्रति हेय व दकियानुसी मानसिकता का विचार बदलना चाहिए नहीं तो परिवार परिवार नहीं रहता कारागृह बन जाता है वहां रहने वाले सदस्यों के लिए घर मात्र चार दिवारी बन जाता है। मार-पिट्टाई, चिल्लाहट, कठोर व भद्दे शब्द, अपमान, ताने उलाहने सब सहें, होठों पर चुप्पी रखें तब तक सब औरत का पक्ष ठीक लेकिन जहां हक और अधिकार की आवाज उठाई नहीं कि पासा ही पलट जाता है। औरत के प्रति मानदण्ड बदल

दिए जाते हैं। उस पर अनेक प्रकार के लांछण लगा दिए जाते हैं। औरत का मान-सम्मान और स्वाभिमान जब एक मर्द है तो पति का मान-सम्मान और स्वाभिमान कौन!!!!

**श्रीमती डॉ प्रकाश जैन
वरि. प्रबन्धक (प्रशासन)**

प्रेरक संदेश

जब हम गलत होते हैं, तो समझौता चाहते हैं।

और दूसरे गलत होते हैं, तो हम न्याय चाहते हैं।।

जब हम किसी को पसन्द करते हैं, तो उसकी बुराईयाँ भूल जाते हैं।

और जब किसी को नापसन्द करते हैं, तो उसकी अच्छाईयाँ भूल जाते हैं।।

अनुमान हमारे मन की कल्पना है। और अनुभव हमारे जीवन की सीख।।

भूल होना प्रकृति है मान लेना संस्कृति है और सुधार लेना प्रगति है ।।

सबसे कठिन काम है सबको खुश रखना।
सबसे आसान काम है सबसे खुश रहना।।

मैं किसी से बेहतर करूं क्या फर्क पड़ता है।
लेकिन मैं किसी का बेहतर करूं, बहुत फर्क पड़ता है ।।

**राजकुमार लावडिया
(वरिष्ठ प्रबन्धक – प्रशासन)**

रामराज्य, अध्यात्म और विज्ञान

गांधीजी का सपना था, राम राज्य स्थापित करने का, लेकिन आजादी के 75 वर्ष हो जाने के उपरान्त भी भारत में राम राज्य स्थापित नहीं कर पाये। क्या आप जानते हैं, कि क्यों नहीं हम राम राज्य स्थापित कर पाये। राम राज्य स्थापित करने के लिए प्रत्येक भारतवासी को राम का चरित्र समझना पड़ेगा, राम दरबार की वास्तविकता को समझना पड़ेगा। राम अर्थात् मर्यादा का पालन करते हुए, मर्यादित कार्य यानि निस्वार्थ काम, क्रोध रहित कर्म तथा अपनी दसो इन्द्रियों को काबू में रखते हुए सम्पूर्ण सृष्टि को अपने अंदर समाहित करने वाला, सम्पूर्ण सृष्टि को स्वयं के समान प्रेम करने वाला, ईश्वर स्वरूप आचरण करने वाले राम का जब तक हम आचरण नहीं अपनायेंगे तब तक राम राज्य स्थापित करना केवल कल्पना मात्र ही रहेगा।

राम दरबार यानि मुख्य शासनकर्ता द्वारा अपनी प्रजा में समाहित हो कर सम्पूर्ण प्रजा को स्वयं में समाहित करने वाला शासक व प्रजा के बीच सामंजस्य बैठाने का सम्मेलन। शासक द्वारा प्रजा में विश्वास उत्पन्न करना कि हम एक दूसरे में समाहित हैं, कोई बड़ा व छोटा नहीं है कोई भी स्वर्ण या अछुत नहीं है, प्रजा ही शासक है और शासक ही प्रजा है।

इस शासक प्रजा के भेद को समाप्त कर राज्य को संचालित करने की क्रिया को ही राज दरबार के नाम से जाना जाता है। जिस प्रकार एक उच्च स्तर के गुरु द्वारा अपने शिष्यों को ज्ञान का मार्ग दिखाया जाता है,

और शिष्यों के हृदय में गुरु का स्थान माता पिता व परमपिता से उच्च स्थान पर होता है। शिष्यों में गुरु भाई होने का प्रेम स्थापित करता है। इसी प्रकार से शासक का स्थान गुरु के जैसे और प्रजा का स्थान भाईयों के प्रेम से परिपूर्ण करने की क्रिया को ही राम दरबार कहा जाता है और ऐसे ही राम दरबार की आज भारत माता को जरूरत है। जिससे सम्पूर्ण रूप से राम राज्य की स्थापना हो सकती है।

अध्यात्म शब्द की गति और विशालता को समझना होगा तभी एक वैज्ञानिक उत्पन्न होगा, एक व्याख्याता उत्पन्न होगा, एक ऋषि या संत उत्पन्न होगा, एक अवतार उत्पन्न होगा। शब्द से ही प्रकृति संचालित होती है। प्रकृति से विज्ञान की उत्पत्ति होती है। प्रकृति के जिन शब्दों का हम शोध कर लेते हैं, उसी को विज्ञान के नाम से जानते हैं और जिन शब्दों का शोध नहीं कर पाते हैं उन्हें आज का युग अंधविश्वास के रूप में मानता है मगर अंधविश्वास कुछ होता ही नहीं है। केवल शोध की ही कमी होती है और वह सत्य है, बिना शब्दों के अध्ययन सम्भव नहीं है बिना शब्दों के बातचीत नहीं हो सकती बिना शब्द कोश के ज्ञान नहीं हो सकता, बिना शब्दकोश के योग, चिन्तन नहीं हो सकता है बिना शब्द और संगीत के प्रकृति संचालित नहीं हो सकती।

लक्ष्मी नारायण मीणा
परिवहन सहायक अधिकारी – द्वितीय

समाज में फैले अंधविश्वास और उनके पीछे के तर्क

हमारे समाज में कुछ ऐसी प्रथाएं प्रचलित हैं, जिन्हें अंधविश्वास कहा जाता है। ढेरों विश्वास या अंधविश्वास हैं, जिनमें से कुछ का धर्म में उल्लेख मिलता है और उसका कारण भी, लेकिन बहुत से ऐसे विश्वास हैं, जो लोक परंपरा और स्थानीय लोगों की मान्यताओं पर आधारित हैं। हालांकि इनमें से कुछ विश्वासों को अनुभव पर आधारित माना जा सकता है।

वैसे तो अंधविश्वास मनुष्य को कर्महीन और भाग्यवादी बनाते हैं, परंतु हमारे समाज में कुछ रिवाज ऐसे भी हैं जिन्हें अंधविश्वास की नजर से देखा जाता है परंतु उनके पीछे के कारण उस समय के अनुसार तार्किक प्रतीत होते हैं। हाँ ये बात ओर है, कि समय के साथ इनकी प्रासंगिकता समाप्त हो चुकी है। इनमें से कुछ जैसे घर के बाहर नींबू मिर्ची टांग देना, दही खा कर घर से बाहर ना निकलना वगैरह-वगैरह के बारे में बात करते हैं :-



बिल्ली द्वारा रास्ता काटना

माना जाता है कि बिल्ली रास्ता काट जाए तो उस रास्ते से नहीं जाना चाहिए, वरना कोई अनहोनी घटना हो जाती है। जबकि ये धारणा

तब बनाई गई होगी, जब पूरी दुनिया प्लेग की माहमारी झेल रही थी। चूंकि बिल्ली का प्रमुख भोजन चूहा है, इसलिए बिल्ली के ज़रिए ये संक्रमण लोगों में फैलने की आशंका रहती थी। इसलिए बिल्ली से दूरी बनाकर रखने के लिए कहा जाता था। महामारियों के समय में बिल्ली से दूरी बनाकर रखने की परंपरा थी।



सांप को मारने के बाद सिर कुचलना

कहा जाता है सांप को मारने वाले की तस्वीर उसकी आंखों में छप जाती है। जबकि इस अंधविश्वासा के पीछे लॉजिक ये है कि सांप के मरने के बाद भी उसका जहर लोगों को मार सकता है। इसलिए उसके सिर को कुचल कर दबा दिया जाता है।

ग्रहण के समय बाहर ना आना

हमारे बड़े अक्सर हमें ग्रहण के समय बाहर निकलने नहीं देते। उनके मुताबिक इस दौरान बुरी ताकते हावी हो जाती हैं। जबकि इसके पीछे का असली लॉजिक है कि ग्रहण के वक्त सूर्य की किरणों से त्वचा के रोग हो सकते हैं। साथ ही नंगी आंखों से उसे देखने से लोग अंधे भी हो सकते हैं।

मंगल और गुरुवार को बाल न धोना

आपने अक्सर देखा होगा अक्सर महिलाएं मंगल और गुरुवार को बाल धोने से परहेज करती हैं। क्योंकि उन्हें लगता है कि इस दिन बाल धोने से बुरे वक्त की शुरुआत होती है।

लेकिन आपको बता दें कि पुराने वक्त में लोग अपने घरों में पानी स्टोर करके रखते थे। सप्ताह के 2 दिन बाल धोने, कपड़े धोने, बाल काटने आदि का निषेध किया गया जिससे पानी को बचाया जा सके। कालांतर में इस प्रथा ने अंधविश्वास का रूप ले लिया।

गर्भवती महिला के बाहर जाने पर पाबंदी

बुरी आत्मा का साया मां और होने वाले बच्चे पर पड़ सकता है। ऐसा करने के पीछे लॉजिक है कि पहले के वक्त में आने-जाने के साधनों की कमी थी और गर्भवती महिलाओं को पैदल चलने की समस्या होती थी। हालांकि वर्तमान समय में यह अंधविश्वास बन चुका है।

रात में नाखून नहीं काटना

लोगों में रात में नाखून ना काटने को लेकर अंधविश्वास है कि रात में ऐसा करने से किस्मत पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जबकि पुराने वक्त में बिजली नहीं होने के कारण रात में नाखून नहीं काटे जाते थे। उस वक्त नाखून काटने के लिए भी औजारों का इस्तेमाल किया जाता था। इससे अंधेरे में उंगलियों के कटने का डर भी होता था। परंतु आज साधन और बिजली दोनों उपलब्ध

होने के कारण यह अप्रासंगिक हो चुका है, और इसके कोई मायने नहीं हैं।

दही खाकर घर से बाहर ना निकलना

किसी भी शुभ काम पर जाने से पहले घर से दही खाकर निकलना शुभ माना जाता है। लेकिन इसके पीछे लॉजिक है कि गर्म मौसम के कारण दही खाने से पेट ठंडा रहता है। साथ ही दही में चीनी मिलाकर खाने से शरीर में ग्लूकोज की मात्रा सही बनी रहती है।

दरवाजे पर नींबू मिर्ची लटकाना

दरवाजे पर नींबू मिर्ची लटकाने पीछे लोगों का अंधविश्वास है कि ऐसा करने से बुरी ताकतों का साया दूर रहता है। इसके पीछे असली लॉजिक है कि नींबू मिर्ची में सायटिक एसिड मौजूद होता है जो कीड़े-मकौड़ों को घर में घुसने से रोकता है।

उपरोक्त सभी उदाहरणों से सिद्ध होता है, कि कहावतें अनुभव के आधार पर और सामयिक आवश्यकता के अनुरूप ही बनती हैं, परंतु समय के साथ ये परंपरा और फिर अंधविश्वास का रूप धारण कर लेती हैं। अतः समय की मांग है कि हर अंधविश्वास या रिवाज के पीछे के तर्क को जानने की कोशिश की जाए एवं वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार ही इन पर विश्वास या अविश्वास किया जाए।

श्रीमती अंजू गर्ग
वरि. प्रबन्धक (सचि.)

सोशल मीडिया के अपराध और कानून

जैसा कि सभी को ज्ञात है कि आधुनिक युग डिजिटल युग है और इस डिजिटल युग का सारथी है सोशल मीडिया जो कि सामाजिक के ताने-बाने को संजोये रखे है, तथापि इसमें लाभ-हानि गुण-अवगुण दोनों ही समाहित है। इस संदर्भ में एक उदाहरण प्रस्तुत है। वॉट्सएप के ग्रुप में दो व्यक्तियों ने पैगम्बर मोहम्मद साहब पर अनावश्यक टिप्पणी की। पुलिस को इसकी जानकारी दी गई। दोनों को गिरफ्तार कर आईपीसी की धारा 66 लगाई गई। कुछ दिनों बाद वे रिहा हुए।



दूसरी घटना में एक्टर हरप्रीत पर आरोप लगा कि उसने एक प्रोडक्शन हाउस के मालिक की आइडेंटिटी का इस्तेमाल कर वॉट्सएप पर एक फर्जी अकाउंट बनाया। वह लड़कियों और मॉडलों के फोटो मंगवाता, पैसा मांगता, शोषण करता, ब्लैकमेल करता। साइबर सेल ने आरोपी को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया।



तीसरी घटना में एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी का फेसबुक अकाउंट हैक कर उससे बदला निकाला। पत्नी ने शिकायत की। पति को दोषी पाया। मामला दर्ज हो गया। सोशल मीडिया के दुरुपयोग के मामले बड़ी तादाद में सामने आ रहे हैं। अतः हमें ध्यान रखना है कि सोशल मीडिया, सोशल वेलफेयर के लिये है न कि क्रिमिनल अफेंस के लिये।

संसद में सन् 2000 में सूचना तकनीक अधिनियम पारित किया गया। फिर इसे 2008 व 2009 में संशोधित किया गया। संयुक्त राष्ट्र की जनरल असेम्बली में सूचना तकनीक की आदर्श नियमावली के बाद यह कानून पेश करना जरूरी हो गया था। भारतीय दंड संहिता, भारतीय साक्ष्य कानून 1872, बैंकर्स बुक्स एविडेंस एक्ट 1891 और रिजर्व बैंक अधिनियम या किसी अन्य कानून में संशोधन में भी इन दस्तावेजों का उपयोग हो सकता है। सूचना तकनीक कानून 2000 के तेरहवें अध्याय में 94 धाराएं हैं, जिन पर दंड होता है, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:-

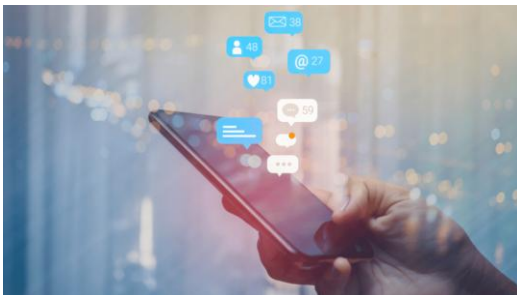
- कंप्यूटर संसाधनों के साथ छेड़छाड़ करना – धारा-65 लागू है।
- कंप्यूटर का डेटा छेड़ना या हैक करना धारा-66 लागू है।
- कोई प्रतिबंधित सूचनाएं एक दूसरे को भेजना धारा-66 ए लागू है।
- सूचनाएं चुराने पर धारा-66बी लागू है।
- किसी की पहचान चोरी करने पर धारा-66 सी लागू है।
- पहचान छिपाकर कंप्यूटर से किसी के व्यक्तिगत डेटा से छेड़छाड़ करने पर धारा-66 डी लागू है।

- किसी की निजता भंग करने के लिए धारा-66 ई लागू है ।
- साइबर आतंकवाद के लिए दंड के लिए धारा-66 एफ लागू है ।
- आपत्तिजनक सूचनाओं का प्रकाशन करने के लिए धारा-67 लागू है ।
- फर्जी डिजिटल हस्ताक्षर करने पर धारा-73 लागू है ।

इसके अलावा भारतीय दंड संहिता में साइबर अपराधों से संबंधित प्रावधान भी है जो कि इस प्रकार है:-

- ई-मेल पर धमकी भरा संदेश भेजा तो धारा 503 के तहत कार्रवाई होगी ।
- मानहानि वाले संदेश भेजने पर धारा 499 के तहत कार्रवाई होगी ।
- फर्जी इलैक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड का इस्तेमाल किया तो धारा 463 के तहत आरोपित की जाती है ।

दिल्ली में देश की पहली साइबर रेगुलटरी कोर्ट का शुभारंभ जुलाई 2009 को हुआ। देश के कई बड़े शहरों में साइबर थाने खोले गए हैं। जिलों में साइबर सेल का गठन किया गया है, जो इन मामलों को सुनते हैं।



धारा 69(ए) के तहत पुलिस को अधिकार है कि वह किसी भी वेबसाइट को ब्लॉक कर सकती है। आईटी अधिनियम की धारा 66ए पिछले साल विशेष चर्चा में आई, क्योंकि सर्वोच्च न्यायालय ने इसे निरस्त कर दिया था। शिखर अदालत ने माना कि इस धारा में प्रयुक्त भाषा का दुरुपयोग भविष्य में हो सकता है।



भले ही अदालत ने इस धारा को निरस्त कर दिया हो, लेकिन फिर भी किसी भी व्यक्ति को बेलगाम होकर गलत बातें लिखने की आजादी नहीं है। अभी भी भारतीय दंड संहिता में बहुत से प्रावधान हैं, जिनमें दंड की व्यवस्था है। पुलिस और सरकार को सुप्रीम कोर्ट ने जरूर इंगित कर दिया है कि आम नागरिक की जायज अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार को 66ए की आड़ में ना कुचला जाए। दूसरी ओर सरकार भी 66ए में बदलाव कर इसे आगे बहाल करने के लिए काम कर रही है।

राजकुमार लावडिया
वरिष्ठ प्रबन्धक – प्रशासन

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय
में
सम्पादित विभिन्न
आयोजनों का विवरण

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस - 2024



मदर्स डे 2024



अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

"Towards Sustainable Urban Mobility in development urban context" Study Tour to Jaipur (14th to 16th November 2024)

विदेश मंत्रालय (एमईए), भारत सरकार एवं हडको द्वारा **"Towards Sustainable Urban Mobility in development urban context"** विषय पर आयोजित भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) के अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम किया गया है। जिसमें 13 देशों जैसे — Cameroon, Ethiopia, Ghana, Kenya, Myanmar, Nigeria, Palestine, Slovak Republic, South Sudan, Sri Lanka, Tajikistan, Uganda, Zimbabwe से 23 प्रोफेशनल, आर्किटेक्ट, टाउन प्लेनर, इंजीनियर, प्रशासक, शहरी डिजाइनर, सामुदायिक विकास समाजशास्त्रियों ने भाग लिया।

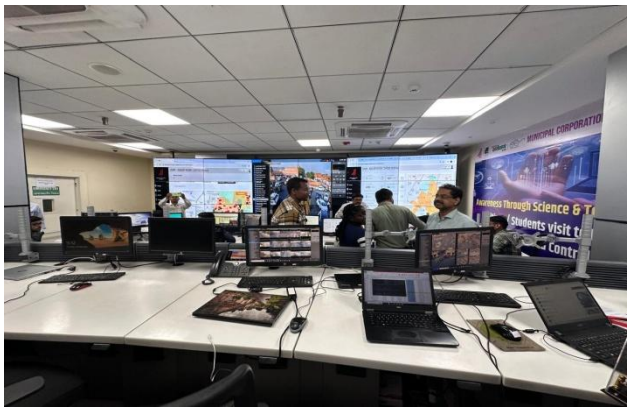
इस वर्ष ट्रेनिंग कार्यक्रम अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों का प्रतिनिधि मण्डल राजस्थान राज्य की विभिन्न आधारभूत संरचना जिसमें मुख्यतः Urban Mobility / Transport संबंधी योजनाओं का अध्ययन करने के क्रम में दिनांक 14.11.2024 से 16.11.2024 तक जयपुर के Study Tour पर रहा।

स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत इंटीग्रेटेड कंट्रोल एंड कमांड सेंटर का दौरा (आईसीसीसी) (Integrated Control and Command Centre (ICCC) under Smart City project)

ट्रेनिंग कार्यक्रम के अंतर्गत जयपुर स्मार्ट सिटी का दौरा किया गया। सर्वप्रथम अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों का राजस्थानी अंदाज में स्वागत किया गया तथा Integrated Command and Control Centers, Jaipur के कार्य प्रणाली को सजीव प्रदर्शन के माध्यम से अवगत करवाया गया। इसके अतिरिक्त जयपुर में स्मार्ट सिटी अंतर्गत किये जा रहे तकनीकी कार्यों पर प्रस्तुतिकरण दिया गया।



जिसमें परकोटो में Smart Wifi Solution, Smart lighting solution, smart city surveillance, smart parking solution (off street / on-street), smart sensors, smart transport management system, smart waste management, smart communications etc. के बारे में बताया गया।



जयपुर मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन का दौरा (Jaipur Metro Rail Project)

ट्रेनिंग कार्यक्रम के अंतर्गत जयपुर मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन का छोटी चौपड़ स्थित Museum का दौरा किया गया। तत्पश्चात प्रतिनिधियों को मेट्रो के माध्यम से सफर करवाकर जयपुर मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन के मुख्यालय में अधिकारियों द्वारा प्रस्तुतिकरण के माध्यम से परियोजना से संबंधित जानकारी प्रदान की गई। प्रस्तुतिकरण में प्रस्तावित मेट्रो के विस्तार कार्यक्रम से भी अवगत करवाया गया। जिसके अतिरिक्त JMRC के organizational setup,

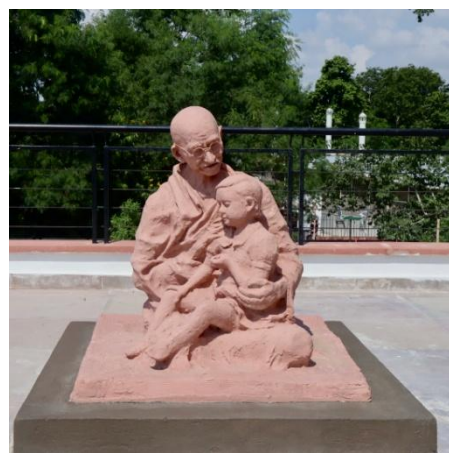
Metro transit technology, need of MRTS, Metro Route alignment in Jaipur, challenges faced during phase -IB implementation in walled city area, typical station section / arrangement, under implementation works, future expansion plan, train operations, daily ridership, revenue generation, financial sustainability etc. के बारे में भी बताया गया।



गांधी वाटिका का दौरा (Gandhi Vatika)

गांधी वाटिका संग्रहालय का उद्देश्य आगंतुकों को महात्मा गांधी के जीवन और शिक्षाओं के बारे में जानकारी देकर एक अनूठा अनुभव प्रदान करना है, न कि तस्वीरों और कलाकृतियों की एक श्रृंखला प्रदर्शित करना।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों को गांधी संग्रहालय का दौरा करवाया गया तथा संग्रहालय में अधिकारियों द्वारा गांधी जी के जीवन से संबंधित पूर्ण जानकारी से अवगत करवाया गया।



ट्रेनिंग कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न पर्यटक स्थलों का दौरा किया गया। दौरे के दौरान अधिकारियों द्वारा विस्तृत जानकारी प्रदान की गई:-

हवा महल



जंतर मंतर



हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय का दौरा

ओवरसीज प्रोफेशनल्स दल के हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय में आगमन पर श्री सुधीर कुमार भटनागर, क्षेत्रीय प्रमुख के सानिध्य में सभी आगंतुकों का राजस्थानी संस्कृति व परम्परा के साथ स्वागत किया गया। ग्रीन सिटी के विकास के तहत ओवरसीज प्रोफेशनल्स दल के प्रत्येक सदस्य द्वारा "हर वर्ष एक वृक्ष" की भावना के साथ पौधा रोपित किया गया।



स्टाफ एवं आश्रितों सहित एक्सकर्जन ट्रिप

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा जयसमंद / उदयपुर के लिए एक्सकर्जन ट्रिप का आयोजन किया गया। दिनांक 10.10.2024 (रात्रि) को जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय के कर्मियों एवं आश्रितों द्वारा जयपुर से जयसमंद के लिए प्रस्थान किया गया।

जयसमंद झील राजस्थान राज्य के अरावली पर्वतमाला के दक्षिण पूर्व में स्थित एक विशाल जलाशय है। यह राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। इस झील को विश्व की दूसरी तथा एशिया की पहली मीठे पानी की कृत्रिम झील होने का गौरव प्राप्त है। अपने प्राकृतिक परिवेश और बौद्ध की स्थापत्य कला की सुन्दरता से यह झील वर्षों से पर्यटकों के आकर्षण का महत्त्वपूर्ण स्थल बनी हुई है।



जयपुर से जयसमंद प्रस्थान के दौरान बस में काफी हर्षोल्लास का माहौल था, सभी ने गाना गाते, मनोरंजन करते हुए सफर तय किया। जयसमंद झील पहुँचने पर नाव पर सफर कर झील के मध्य बने जयसमंद रिसोर्ट पर गये





दिनांक 11.10.2024 को जयसमंद रिसोर्ट में एक दिन प्रवास के दौरान विभिन्न मनोरंजन कार्यक्रम / खेल गतिविधियों का आयोजन किया गया:-

1. Housie
2. Boating / Camel Ride
3. Damsharas
4. Dandiya
5. Couple dance



रिसोर्ट में रात्रि में हडको कर्मियों एवं महिलाओं हेतु राजस्थान पारंपरिक परिधान में संगीत / नृत्य का आयोजन किया गया। जिसमें महिलाओं द्वारा रंग बिरंगे परिधान व पुरुषों द्वारा कुर्ता पजामा पहना गया। कार्यक्रम में राजस्थानी संगीत पर महिलाओं एवं पुरुषों द्वारा राजस्थानी गीतों पर नृत्य / डांडिया का आनंद लिया गया:-





दिनांक 12.10.2024 (प्रातः) को जयसमंद रिसोर्ट से अनंता रिसोर्ट, उदयपुर के लिए प्रस्थान किया। अनंता रिसोर्ट में एक दिन प्रवास के दौरान मनोरंजन कार्यक्रम के साथ रिसोर्ट द्वारा आयोजित रावण दहन कार्यक्रम व **राजस्थानी गीतों पर नृत्य** का आयोजन किया गया। जिसमें सदस्यों द्वारा परिवार सहित प्रतिभागिता की गई। इस दौरान की कुछ छायाचित्र निम्न है:-



हडको क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग जागरूकता शिविर



हडको क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर द्वारा दिनांक 07 अगस्त 2024 को पी. एम. श्री. केंद्रीय विद्यालय नंबर 5, मानसरोवर, जयपुर में हडको कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (Corporate Social Responsibility) के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। योग कार्यक्रम में विद्यालय के कक्षा छठी से दसवीं तक के लगभग 300 विद्यार्थियों, प्रधानाचार्य / शिक्षकों एवं हडको के क्षेत्रीय प्रमुख - श्री सुधीर कुमार भटनागर व अन्य अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभागिता की। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को योगा मैट, t-shirt, कैप व फूड पैकेट्स भी वितरित किये गए।



इस अवसर पर श्री सुधीर कुमार भटनागर द्वारा विद्यार्थियों को सम्बोधन में बताया कि विद्यार्थी किसी भी राष्ट्र का भविष्य हैं और किसी राष्ट्र का भविष्य सुरक्षित व स्वस्थ रखने के लिए विद्यार्थी जीवन में योग के महत्व को समझना बेहद अनिवार्य है। योग विद्यार्थियों की मानसिक और शारीरिक स्थिति को जटिल से आसान बनाता है, साथ ही उनकी सोच का सकारात्मकता के साथ विस्तार व व्यापक विकास भी करता है। योग को दिनचर्या का अंग बनाने से कई प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं जैसे - योग विद्यार्थियों के मनोबल को बढ़ाने का काम करता है। योग विद्यार्थियों को शारीरिक और मानसिक तौर पर मजबूत बनाता है। योग के लिए आयु की कोई सीमा नहीं है क्योंकि यह शरीर को लचीला, निरोगी, स्वस्थ और तनाव मुक्त बनाता है।



विद्यार्थियों को योगा के माध्यम से योग की जानकारी प्रदान करने हेतु श्रीमती रुचि शर्मा, योग अनुदेशक (Yoga Instructor) को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। इनके द्वारा बताया गया कि योग तन और मन दोनों से स्वस्थ रखने में मदद करता है। योग करने से शरीर के तमाम अंग स्वस्थ तरीके से काम करते हैं और पूरे शरीर पर इसका व्यापक असर होता है। विद्यार्थियों में स्ट्रेस को दूर करने हेतु योग अति आवश्यक है। अगर आप 10 - 15 मिनट रोजाना योग करें तो आप खुद को कई बीमारियों से बचा सकते हैं और मन भी स्वस्थ रहता है। विद्यार्थियों एवं अध्यापकों द्वारा इस कार्यक्रम का अति उत्साह के साथ बारिश की बूँदा बाँदी के मध्य आनंद लिया गया।

अंत में प्रधानाचार्य द्वारा योग कार्यक्रम आयोजित करने तथा विद्यार्थियों को योग पर जानकारी प्रदान करने पर हृदय की आभार प्रकट किया।

हडको का 54वां स्थापना दिवस जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा दिनांक 3 मई 2024 को "जय महल पैलेस" जयपुर में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में श्री के. के. भटनागर जी, पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक – हडको, श्री बलदेव सिंह सौई, पूर्व क्षेत्रीय प्रमुख, श्री राम सिंह गुनावत, पूर्व कार्यकारी निदेशक – हडको, श्री नरेश कुमार नाकरा, पूर्व क्षेत्रीय प्रमुख एवं आमंत्रित राज्य सरकार के उच्च अधिकारी – जयपुर नगर निगम हेरिटेज मेयर श्रीमती मुनेश गुर्जर, श्री महावीर प्रसाद शर्मा, प्रमुख सचिव, राजस्थान विधान सभा, श्री हेमन्त शर्मा, परियोजना निदेशक, RUIDP, श्री अनिल सिंघल, मुख्य अभियंता, श्री ए.के. जोशी, निदेशक (वित्त), जयपुर विद्युत वितरण निगम लि., श्री देवेन्द्र अरोड़ा, संयुक्त सचिव, वित्त विभाग, श्री देवेन्द्र श्रृंगी, प्रबन्ध निदेशक, राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लि., श्री राकेश लुहाड़िया, मुख्य अभियंता (अर्बन), PHED, श्री संजय सक्सेना, अति. परियोजना निदेशक, NHM, श्री मुकेश भाटी, मुख्य अभियंता, PWD, श्री अनिल विजयवर्गीय, अतिरिक्त मुख्य अभियंता, PWD, श्री एम.एम. खान, वित्तीय सलाहकार, राजस्थान राज्य सड़क विकास एवं निर्माण निगम लि., वित्तीय विभाग, राजस्थान सरकार के प्रतिनिधी, अन्य संस्थाओं के अधिकारी तथा हडको क्षेत्रीय कार्यालय के वर्तमान अधिकारी और कर्मचारियों द्वारा अपने परिवार सहित आयोजन में उत्साहपूर्वक भागीदारी की गई।





कार्यक्रम में हडको के क्रियाकलापों के क्रम में तथा राजस्थान राज्य में विगत तीन वर्षों में किए गए कार्यों का प्रस्तुतीकरण किया गया।



HUDCO CSR INITIATIVE

रवीन्द्रनाथ टैगोर आयुर्विज्ञान महाविद्यालय एवं संयुक्त अस्पताल एसोसिएशन, उदयपुर को (राजस्थान) एडवांस्ड लाइफ सपोर्ट सुविधा युक्त एम्बुलेंस प्रदान की गई।



हडको द्वारा सीएसआर निति के तहत रवीन्द्रनाथ टैगोर आयुर्विज्ञान कॉलेज एवं संयुक्त अस्पताल एसोसिएशन, उदयपुर (आरएनटी) को एडवांस्ड लाइफ सपोर्ट (एलएस) सुविधा के साथ एक एम्बुलेंस वैन (BS VI 2) क्रय करने हेतु रुपये 58.89 लाख का सीएसआर अनुदान प्रदान किया गया है। अत्याधुनिक एम्बुलेंस में महत्वपूर्ण जीवन रक्षक उपकरण लगे हैं। एम्बुलेंस में चिकित्सा उपकरणों में लोडिंग स्ट्रेचर, व्हील चेयर कम स्टेयर चेयर, ट्रांसपोर्ट वेंटिलेटर, सिरिज इन्फ्यूजन पंप, पोर्टेबल ऑक्सीजन सिलेंडर, इमरजेंसी किट, बचाव उपकरण आदि शामिल हैं। एम्बुलेंस स्टेज - VI फेज - 2 मॉडल पर आधारित है। सीएसआर पहल से आपातकालीन स्थिति में मरीजों के उपचार में सुविधा प्रदान होगी।



कार्यकारी निदेशक (सीएसआर), हडको कॉर्पोरेट कार्यालय और क्षेत्रीय प्रमुख, हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय ने समारोह में भाग लिया और स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में दिनांक 17 जनवरी 2025 को रवीन्द्रनाथ टैगोर आयुर्विज्ञान कॉलेज को एम्बुलेंस की चाबियां सौंपी गईं।



सेवानिवृत्ति के बाद नया दौर....

सेवानिवृत्ति व्यक्ति के जीवन का एक बहुत अभूतपूर्व एवं महत्वपूर्ण समय होता है जो जीवन के नए चरण की शुरुआत के साथ नए अवसर और सुखद अनुभव प्रदान करता है।

निश्चित आयु के बाद अर्थात् सेवानिवृत्ति के बाद व्यक्ति नौकरी से संबंधित किसी पद एवं कार्यों की किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी से पूर्णतः मुक्त हो जाता है। सेवानिवृत्ति के बाद नियमित वेतन और आय नहीं मिलता है किंतु इसका अर्थ सिर्फ नौकरी या पेशेवर सक्रियता से आर्थिक रूप से सेवाओं के लिए काम बंद करना ही नहीं होता है अपितु यह जीवन का अमूल्य पल होता है जिसमें व्यक्ति अपनी पसंद, शौक, यात्रा, भ्रमण, स्वास्थ्यवर्धक व अन्य रचनात्मक गतिविधियों में सुलभता से भागीदारी प्रदान कर आनन्दित रह सकता है।

हडको, जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय से पिछले कुछ महिनों में दो अधिकारी श्री अरुण शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक-राजभाषा तथा श्री नरेश कुमार ठागरिया, उप महाप्रबंधक-आईटी सेवानिवृत्त हुए हैं। श्री अरुण शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक-राजभाषा जिन्होंने हडको में दिनांक 03.09.1992 से नियमित रूप से दिनांक 31.12.2024 तक 32 वर्ष तक हडको को सेवाएं प्रदान करते हुए दिनांक 31.12.2024 को हडको सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए हैं इनके द्वारा फिल्मी गीत कभी अलविदा ना कहना.... और बिश्वजीत सोय, संयुक्त महाप्रबंधक-परियोजना, श्री अनिल कुमार खण्डेलवाल, वरिष्ठ वित्त अधिकारी द्वारा भी अपनी मधुर आवाज में गाने गाकर कार्यक्रम को और रोमांचक बनाया। सेवानिवृत्ति कार्यक्रम को हडको, जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा यादगार बनाकर प्रफुल्लित होते हुए, छायाचित्रों में सहेजकर एवं संयोजकर रखा गया है—



श्री नरेश कुमार ठागूरिया, उप महाप्रबंधक-आईटी हडको सेवाओं से दिनांक 28.03.2025 को सेवानिवृत्त हुए हैं।



श्री नरेश ठागरिया, उप महाप्रबंधक-आईटी ने भी अपने दिल के उद्गार कविता के रूप में कुछ इस तरह उजागर किए—

जिन्दगी की दौड़ दौड़ते दौड़ते अब ठहराव आया है
सुन रहे पलों को जीने का उम्र का वह पड़ाव आया है
ऑफिस की फाईल पढ़ते-पढ़ते अब विराम आया है
जिन्दगी की दौड़ दौड़ते अब ठहराव आया है।

कभी एक क्षण भी बेकार नहीं किया जीवन में
अब रिटायरमेंट में खाली बैठने का मज़ा भी कुछ और है।

ना जागने की झंझट न सोने की जल्दी
रख के अलार्म को टांड पर
अब सोने का मज़ा भी कुछ और है।

शरीर को हमेशा एक्सरसाइज करके
फिट रहने की लगती थी जरूरत
अब आराम फरमाने का मज़ा भी कुछ और है।

हमेशा सिक लीव और पेइड लीव में ही जिए
और छुट्टी को तरसे अपनों के साथ रहने को
अब जब अकेले है तो सब बिजी
तब मुक्ति से जीने का मज़ा भी कुछ और है।

हमेशा यस सर यस सर कहने की आदत थी
अब यस मेडम यस मेडम कहने की आदत डालनी होगी
अपने मन की बात ना कह सके कभी
अब अपनी बात खुलके कहने का मज़ा भी कुछ और है।

कभी ट्रांसफर के डर से कभी शराफत की वजह से
कभी सीनियर के कारण तो कभी माहौल के कारण
न कह सके जो बातें वो कहने का अब मज़ा भी कुछ और है।

बीते हुए साल वापस तो ना मिलेंगे कभी
छूटे हुए साथ वापस तो ना मिलेंगे कभी
लेकिन अब रिटायरमेंट में मुस्कुराने का मज़ा भी कुछ और है।

साथ ही श्री नरेश कुमार ठागरिया, उप महाप्रबंधक—आईटी के पुत्र श्री गुंजन ठागरिया जोकि इस अवसर पर उपस्थित नहीं थे इनके द्वारा अपनी भावनाएं व्हाट्सएप पर इस प्रकार भेजी गई—

सॉरी पापा, मैं वहाँ नहीं हूँ मैं जानता हूँ यह बहुत ही इम्पोर्टेंट दिन है। आपने इतने साल जो मेहनत की, सब पर्सनल और प्रोफेशनल सेक्रिफाईस उसकी वजह से ही आज अपनी फैमिली यहाँ हैं... मैं तो आपकी ही वजह से यहाँ हूँ...आपने लाईफ लॉग सपोर्ट किया है...हर एक चीज में, जब जॉब नहीं लगी थी जब भी मुझे याद है आपने बोला था सव तू चिंता मत कर मैं हूँ ना पीछे देखने को तू टेंशन फ्री होकर एग्जाम दें... आपको याद नहीं होगा लेकिन मैं जानता हूँ बी कॉम फर्स्ट इयर या सेकण्ड इयर में मेरे एक सब्जेक्ट में खराब मार्क्स आए थे, वैसे तो सब में ही खराब थे...आलमोस्ट पासिंग। उस समय में बड़ी मम्मी के यहाँ शास्त्री नगर रुकने आया हुआ था तो मैं थोड़ा डरा हुआ था कि आप कुछ बोलेंगे। शाम को बात की तो आपने बोला मार्क्स के लिए ठीक है, यहाँ मानसरोवर में तो तेरे पसंद का बैंगन का भरता बनाया है... कुछ नहीं बोला आपने मार्क्स के लिए। कुछ नहीं बोला आपने मार्क्स के लिए।
थैंक्यू पापा, सब कुछ के लिए। अभी मेरा टाईम है आपको रिलेक्स फील कराने का..... अभी काम कम करना है.... थोड़ा आलसी बनना है... लव यू पापा...आशा करता हूँ कि आपके जैसा बन पाऊँ।

श्री अनिल कुमार खण्डेलवाल, वरिष्ठ प्रबंधक—वित्त द्वारा भी अपने शब्दों में श्री नरेश कुमार ठागरिया को सेवानिवृत्ति की बधाई इस प्रकार दी—

तर्ज—तुम्ही मेरे मंदिर तुम्ही मेरी पूजा

बधाई रिटायरमेंट की तुमको हमारी
100 वर्ष की ओ आयु तुम्हारी

कोई गम ना आए कभी जिंदगी में
खुशियों के सावन बरसे सदा जिंदगी में
फले—फूले बगिया हमेशा तुम्हारी

प्रभु की कृपा से दिन ये आज आया
शुभकामनाओं का ये गीत हमने गाया
धनरोगी रहो तुम दुआ है हमारी
100 वर्ष की हो आयु तुम्हारी

सूरज की किरणें तेज दे आपको
खिलते हुए फूल खुशबु दे आपको
हम जो देंगे वो भी कम होगा
देने वाला जिंदगी की हर खुशी दे आपको

इतनी सी मेरी दुआ कबूल हो जाए
कि तेरी हर दुआ कबूल हो जाए
तुम्हें मिले रिटायरमेंट पर लाखों खुशियां
और जो तुम चाहो रब से वो पल भर में मंजूर हो जाए

जैसाकि सबको मालूम है आज हमारे साथी
और एक अच्छे ऑफीसर का विदाई समारोह है
इनका हडको में लगभग 32 साल की
सेवा की और हमें इनका 32 साल
साथ काम करने का मौका मिला है।

ठागरिया साहब एक शांत स्वभाव व
सुशील व्यवहार वाले अधिकारी है।

किसी के होने या न होने से कोई कार्य नहीं रुकता लेकिन कर्म और शैली हमेशा बोलते हैं और सदैव स्मृति भी रहेंगे। सेवानिवृत्ति के बाद नए दौर के लिए अश्रुपूरित एवं मायूसी भरे भावों के साथ इन दोनों अधिकारियों के सुखद, स्वस्थ एवं आनन्दित भविष्य के साथ जीवन-यापन करने की दुआओं के साथ इन्हें हडको की कार्य सेवाओं से विदा किया गया।

नमोक रणाय समीत दुसरे सत्राबाबतही को
लागला. कसम ही कायची निश्चिती
अनेकसर पर राख सकोर व्हाई जाल्लम
पुढ आरमण उपलपणीत करीरिल्ल
कारण पांच मंजिली आणुत एव
उपलवन्न अवयवविस्तार ही राया बा
भातलगत सौर कळ सवन इसा जल्लरा
का दिख्ता ही.

राष्ट्र के सपनों को साकार करने तथा जीवन गुणवत्ता को प्रोन्नत करके राष्ट्र निर्माण में सहभागिता के लिए प्रतिबद्ध



हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली – 110 003

www.hudco.org



आवास



शहरी विकास



इन्फ्रास्ट्रक्चर



प्रशिक्षण



परामर्श सेवाएं